अंक 9

वर्ष 2018

टी.ई.सी.

संचारिका

वार्षिक गृह पत्रिका

भारत सरकार
दूरसंचार विभाग
दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र
खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली - 110001

www.tec.gov.in

शुभारंभ

हिन्दी पखवाड़ा
2017

संदेश

प्रिय पाठकों,

यह हर्ष का विषय है कि हमारी हिन्दी गृह पत्रिका ''टी.ई.सी. संचारिका'' के नौवे अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। गृह पत्रिका का नियमित प्रकाशन इस बात का संकेत है कि राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के प्रति हमारा प्रयास जारी है।

भाषा राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि राष्ट्र को सशक्त बनाना है तो एक भाषा होनी चाहिए। इसलिए प्रत्येक विकसित तथा स्वाभिमानी देश की अपनी एक भाषा अवश्य होती है जिसे राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त होता है।

आज का युग संचार का युग है इसमें सोशल मीडिया जैसे–फेसबुक, व्हाट्सएप्प, ट्विटर और अन्य मीडिया में हिन्दी के कई विकल्प रखे गए हैं और साथ ही हिन्दी के भंडार भरे पड़े हैं। इसमें भी हिन्दी भाषा के शब्दकोश के बारे में जानकारियाँ दी जाती हैं। सभी को एकजुट होकर हिन्दी के विकास को एक नये सिरे से शिखर तक ले जाना होगा।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में गृह पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण होता है। इस गृह पत्रिका का प्रकाशन निश्चित रूप से कार्मिकों के बीच हिन्दी में कार्य करने का उत्साह पैदा करेगा। सभी लेखकों एवं सहयोगीगणों को बधाई देता हूँ और आगे भी आपसे इसी तरह की अपेक्षा रहेगी।

मुझे विश्वास है कि ''टी.ई.सी. संचारिका'' का नवीन अंक भी पाठकों को पंसद आएगा और पाठकों की प्रतिक्रिया भी अवश्य प्राप्त होगी।

(महाबीर प्रसाद सिंघल)
कार्यालय प्रमुख एवं वरिष्ठ उप महानिदेशक
दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

संपादकीय

प्रिय साथियों,

''टी.ई.सी. संचारिका'' का नवीन अंक अपने पाठकों को सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

हिन्दी विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है और भारत की राजभाषा है। हिन्दी और इसकी बोलियाँ सम्पूर्ण भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में भी लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम और नेपाल में भी हिन्दी बोली जाती है। हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के स्तर को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास क्षेत्र से जुडे वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी हिन्दी प्रेमियों के लिए बड़ी संतोषजनक है कि आने वाले समय में विश्वस्तर पर अंतर्राष्ट्रीय महत्व की जो चन्द भाषाएँ होंगी उनमें हिन्दी भी प्रमुख होगी।

दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र एक तकनीकी कार्यालय है इसके बावजूद इस कार्यालय में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाने की दिशा में समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं। इस पत्रिका में विभिन्न विषयों पर रचनाओं का समावेश किया गया। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मैं रचनाकारों, पत्रिका के प्रकाशन में संरक्षक एवं मार्गदर्शक और सहयोगीगणों को बधाई देता हूँ और सभी का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग से ''टी.ई.सी. संचारिका'' का वर्तमान अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

उम्मीद है, पाठकगण इस अंक को भी सार्थक एवं सुरूचिपूर्ण पाएंगे। प्रबुद्ध पाठकों के सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

(राम लाल भारती)
उप महानिदेशक (एन.जी.एस.)
दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

संरक्षक एवं मार्गदर्शक
श्री महाबीर प्रसाद सिंघल
कार्यालय प्रमुख एवं
वरिष्ठ उप महानिदेशक

उप संरक्षक
श्रीमती नीलम सिंघल
उप महानिदेशक (पी. एंड टी.)

संपादक
श्री राम लाल भारती
उप महानिदेशक (एन.जी.एस.)

सह संपादक
श्री राजेन्द्र प्रसाद
निदेशक (एन.जी.एस.)

सहयोगी गण
श्री संजीव नारंग
श्री वी. पी. अजनसोंडकर
श्री राजेश त्रिपाठी
श्री हर्ष शर्मा
श्री अमरदीप

: नोट :
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं।

विषय सूची

क्र. सं.	रचनाएँ	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	सरस्वती वंदना		4
2.	आदर्श नारी : आज की सीता	अभय शंकर वर्मा	5
3.	ये मत सोचो की	नीतू सिंह	7
4.	घड़ी	अवधेश सिंह	8
5.	21वीं शताब्दी में भारत	हरित चौधरी	9
6.	किसान का जीवन	राजेश कुमार मीणा	11
7.	आज ही क्यों नहीं	हर्ष शर्मा	12
8.	सोच	रेखा	13
9.	मायूस बात और मैले मन	आकांक्षा गुप्ता	14
10.	जीवन का सत्य	नूपुर शर्मा	15
11.	मेरी प्यारी माँ	ईश्वर	16
12.	मैं रुका रहा रास्ते चलते रहे	अवधेश सिंह	17
13.	जिम्मेदार	राजेश कुमार	18
14.	नफरत	विवेक कृष्ण वर्मा	19
15.	कर्मों का फल और तीन चींटियाँ	चितरंजन कुमार	20
16.	कहाँ गया मेरा आँगन और भारत माँ का बेटा	अजीत शर्मा	21
17.	मंदिर का पुजारी	राजेश त्रिपाठी	22
18.	मेरी गुरु माँ	राकेश बेदी	23
19.	तमाचा	अमरदीप	24
20.	पिता क्या है	जितेंद्र कुमार मीणा	25
21.	खुश रहने वाले लोगों की 7 आदतें	नरेश सैनी	26
22.	न मैं हूँ महान न तुम हो महान	नीतू सिंह	29
23.	स्वच्छ एवं समृद्ध भारत	निर्भय कुमार मिश्रा	30
24.	जिंदगी	नीलम	34
25.	साथ का महत्व	नीलम	35
26.	प्रेरणा	पर्णिका शर्मा	36
27.	गुटखा और सात अंक की महिमा	ऊषा कुमारी	37
28.	कहते हैं और क्या आप जानते हैं	ऊषा कुमारी	38
29.	हिन्दी पखवाड़े का आयोजन		39
30.	हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं		46
31.	हिन्दी कार्यशालाएँ		47
32.	क्षेत्रीय दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र (पश्चिमी क्षेत्र) मुंबई		48
33.	राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान		49

सरस्वती वंदना

हे माँ सरस्वती, तेरी कृपा बनी रहे
दया करो देवी, तेरी महिमा बनी रहे

मंगल पावन, दोष नशावन
चिंता हारण, सुख बरसावन
ज्योत यू जलती रहे, तेरी महिमा बनी रहे
हे माँ सरस्वती, तेरी कृपा बनी रहे

ज्ञान बढ़ावन, मोह नशावन
शांति प्रदावन, क्लेश मिटावन
ज्ञान यू देती रहे, तेरी महिमा बनी रहे
हे माँ सरस्वती, तेरी कृपा बनी रहे

सत्य सनातन, अविचल पावन
गीत प्रकाशन, गुण–गान गावन
'जग' यू गाता रहे, तेरी कृपा बनी रहे
हे माँ सरस्वती, तेरी कृपा बनी रहे
दया करो देवी, तेरी महिमा बनी रहे

आदर्श नारी : आज की सीता

पुरुष–प्रकृति, नर–नारी, बीज–भूमि, धन–ऋण – ये सभी संसार की सृष्टि के मूल तत्व हैं। द्वंद्वात्मक रूप में दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। जैसे राम के साथ सीता और सीता के साथ राम पूर्ण हैं, वैसे ही उपर्युक्त दो तत्व एक दूसरे के सम्पूरक हैं। एक के बिना दूसरा महत्वहीन तथा निरर्थक–सा है। ठीक वही स्थिति हमारे गाँव के मास्टर साहेब शिवबाबू और उनकी पत्नी प्रेमदेवी उर्फ देवी जी की है।

मास्टर साहेब ने एक बार कहा था –''यदि मैं नारी होता तो जय की माँ (देवीजी) के रूप में ही प्रतिछवित होता। 'एकोऽहंबहुस्याम्' ही सृष्टि का मूल कारण है। साथ ही 'एकाकी न रमते' भी सृष्टि का मूलाधार है। देवी जी भी उसी क्रम में मास्टरसाहेब के ही सम्पूरक नारी स्वरूप में हमारे सम्मुख साकार हुई हैं।

प्रेम जी मुजफ्फरपुर में पदस्थापित अमीन श्री रामप्रसाद की इकलौती कन्या हैं। अमीन साहेब गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी भगवत प्रेमी हैं। उनकी नजरों में सभी धर्म एक समान है एवं सभी धर्मों के इष्ट पूजनीय हैं। वह नियमित रूप से प्रातः स्नान के पश्चात भगवत पूजन का ही अन्न–जल ग्रहण करते हैं। शिवबाबू की दादी से जब अमीन साहेब की कन्या के विवाह की बात की जाती है, तो इस हेतु वह तुरंत तैयार हो जाती हैं। वे कहती हैं इस कन्या को तो मैं पहले से ही जानती हूँ। यह मेरे शिव के लिए उपयुक्त जोड़ी है। बड़ी ही धूमधाम से इनका विवाह संपन्न होता है। पुरुष एवं प्रकृति के मिलन की शुभ बेला में आदि पुरुष–आदिनारी / आदिशक्ति के साथ, राम–सीता के साथ विचरण विहरण करने लगते हैं।

उधर गांव में शिवबाबू की माता राजवती देवी अपने खेतों में काम करने वाले मजदूरों एवं रैयतों के लिए सामूहिक–भोजन की व्यवस्था करती हैं, उनका मानना है कि ये मजदूर उनके परिवार के उत्थान के लिए काम कर रहे हैं, अतः इनका दर्जा उनके पुत्रों के समान है और एक माँ कभी अपने पुत्रों को बिना खिलाये जाने नहीं देती। कालान्तर में इस सामूहिक–भोजन की परंपरा को मूर्त्त एवं साकार रूप देने का श्रेय देवी जी को ही है। घर में चावल नहीं है, दाल कहाँ से आयेगी, सबका प्रबन्ध देवी जी करती हैं। मास्टर साहेब के शिष्यगण एवं मिलने आने वाले सभी लोगों को जो किसी काम से आये हैं– भोजन के रूप में खिचड़ी या माँड़–भात ही सही, कुछ न कुछ तो खिलाना ही है। काम के बाद स्नेह एवं ममता से तैयार किया गया भोजन आगंतुकों के लिए अमृत बन जाता है। आगंतुक कभी पूरा तो कभी दो–चार कौर भात या खिचड़ी खाकर ही तृप्ति का बोध करते हैं। पठन–पाठन एवं अन्य काम अबाध गति से आगे बढ़ता है। आगंतुकों में अपूर्व प्रेरणा एवं कर्मठता का संचार होता है। सबके मूल में है देवीजी का अपार स्नेह, माता की ममता, जो सभी को उद्–बुद्ध एवं उत्प्रेरित करती है, अपने इष्ट कर्म में सतत् प्रयत्नशील एवं जागरूक रहने हेतु।

राम–सीता जब वन में निवास करते हैं, सीता माँ की सुरक्षा के लिए लक्ष्मण जी पहरेदार हैं। पर, यहाँ तो बात निराली है, अनूठी है। शिवबाबू रात्रि विश्राम कर रहे हैं, तो उनकी पहरेदार बनती हैं – स्वयं देवी जी। राम की सीता को वन – वन भटकना पड़ता है, पर आज की सीता – देवीजी सदैव शिवबाबू के चरणों में ही समर्पित रहती है, उनकी सेवा ही इनका जीवनाधार बनता है। त्रेता की सीता को पति सेवा का जो सुयोगाभाव होता है, पति के लिए जो व्याकुलता, अतृप्ति रह जाती है, इस युग की सीता को वह कष्ट, वैसी व्याकुलता नहीं झेलनी पड़ती है। मानो त्रेता की सीता की

अतृप्ति, इस युग की सीता की तृप्ति से संतृप्त होती है। देवीजी की पति परायणता, एकानुरक्ति, उनकी सतीत्व भावना, अनूठी है, अनोखी है, अतुलनीय है और है – आज की घर–घर की सीता के लिए अनुकरणीय।

शिवबाबू हर सप्ताह सत्संग का आयोजन करते हैं, जिसमें दूर दूर से उनके गुरुभाई सम्मिलित होते हैं। सत्संग की सारी व्यवस्था देवी जी की देखरेख में होती है। सभी लोगों की सत्संग के पश्चात् भोजन कराने का भी इंतजाम देवी जी के जिम्मे होती है, जिसे वह बखूबी संभालती हैं।

देवी जी गाँव के ही कन्या विद्यालय की प्राचार्या हैं । विद्यालय में एक उत्सव के अवसर पर एक नाटक का आयोजन है। देवी जी को ही उसका उद्घाटन करना है। सभी तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। देवी जी की प्रतीक्षा है। जब उनसे आग्रह किया जाता है कि नाटक के मंचन में देरी हो रही है, आप चलिए, तो उनका उत्तर है " अभी मास्टर साहेब के द्वारा आयोजित सत्संग में ठाकुरजी का भोग हो रहा है, जब तक पूरा नहीं होता, यमराज भी आएंगे तो मैं यहाँ से टलने वाली नहीं।" सभी प्रतीक्षारत रहते हैं, ठाकुर जी के भोग सत्संग की समाप्ति एवं सत्संगियों को प्रसाद वितरण के पश्चात ही देवी जी जाकर नाटक का शुभारंभ करती हैं।

एक दिन मास्टर साहेब के भोजन के लिए देवी जी चावल चुन रही हैं – एक भी कंकड़ न रहे – चौकस दृष्टि है। दूसरे दिन मास्टर साहेब को खिचड़ी खाने की इच्छा जगती है। भोजन बनकर तैयार है – भात दाल व्यंजन आदि। मास्टर साहेब कहते हैं, ''खिचड़ी खाऊँगा'', वे आसन पर बैठ जाते हैं – देवी जी भात दाल से ही खिचड़ी बनाकर मास्टर साहेब के समक्ष प्रस्तुत कर देती हैं। यह है – उनका प्रत्युत्पन्नमतित्व, पति–सेवा–भाव को कार्य रूप देने की आतुरता। जब कभी देवीजी को कोई आकांक्षा, जिज्ञासा होती–मास्टर साहेब उनके लिए निकट प्रस्तुत होते थे। उधर मास्टर साहेब की किसी भी प्रकार की आकुलता, चिन्ता दूर करने हेतु देवी जी उनके चरणों में तत्पर और तैयार रहती थी।

हर बार गाँव जाने पर देवी जी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है, 'राजवती मातृ सदन' में साक्षात् श्री लक्ष्मी रूपी देवी जी को मैं अपने आँखों सौम्य एवं सरलता की प्रतिमूर्ति के रूप में देखता हूँ। जगदम्बिका जगन्माता सीता के रूप में देवी जी का अपूर्व दर्शन प्राप्त कर मैं अपने को धन्य मानता हूँ। पिछली बार जब मैं उनके दर्शन के लिए गया था तो वहाँ वे एक मोढ़े पर सरल सहजरूप में बैठी थी पता चला – आज देवीजी के पारण का दिन है। उन्होंने चार दिनों के प्रजापति यज्ञ का कल ही समापन जो किया है। जगन्माता सीता देवी जी स्वयं व्रत–नियम का पालनकर नारी–जगत को प्रेरणा देती हैं – व्रत–नियम पालन हेतु। तभी तो शरीर मन–प्राण सभी अनुप्राणित होंगे इष्ट में। इष्टानुराग की पतिव्रता बनने, सती–सावित्री बनने, आदर्श माता बनने की प्रेरणा देता है। देवी जी ने हनुमान की भांति सूर्य को अपने वश में कर लिया है। समय को अपने वश में रखती हैं, वे कभी भी समय के वश में नहीं होती। भोर में मास्टर साहेब की सेवा करती हुई सूर्यादय से पूर्व ही स्नान–ध्यानादि नित्य–क्रिया से निवृत्त हो बिल्कुल तैयार हो जाती हैं।

पति–पत्नी के आदर्श रूप है – इनका जीवन। देवीजी सदैव मास्टर साहेब के चरणों में, उनकी सेवा में समर्पित। इनका भरा–पूरा परिवार है, कुल सात बच्चे जिनमें तीन पुत्र एवं चार पुत्रियां और उनसे कई नाती–नातिन,

पोते–पोतियां। सभी पुत्र–पुत्री आज समाज में उच्चपदस्थ होकर उनके सुकर्मों को आगे बढ़ा रहे हैं, जिनसे जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। धन्य हैं, देवीजी, उनसे धन्य है – सम्पूर्ण संसार। इस युग की सीता ने हमें अपूर्ण प्रेरणा दी है, विशेषकर नारी–जगत को एक साकर दिग्दर्शन दिया है, जिसे अनुकरण कर, अनुसरण कर हमारी घर–घर की सीता अपने घर–परिवार को आदर्श, इष्ट प्राण एवं समुन्नत करने की दिशा में अग्रसर हो रही हैं।

वर्तमान परिदृश्य में ऐसी आदर्श नारी : आज की सीता को शत–शत नमन।

अभय शंकर वर्मा
उप महानिदेशक (एम.टी.)

ये मत सोचो कि....

ये मत सोचो कि तुम्हारे पास क्या नहीं है,
बल्कि, उसे सराहो जो तुम्हारे पास है और जो हो सकता है।

ये सोच कर दुखी मत हो कि तुम क्या नहीं हो,
बल्कि, ये सोच कर खुश हो कि तुम क्या हो और क्या बन सकते हो।

ये मत सोचो कि लोग तुम्हारे बारे में क्या कहते हैं,
बल्कि, ये सोचो कि तुम खुद अपने बारे में क्या सोचते हो और क्या सोच सकते हो।

ये मत सोचो कि कितना समय बीत गया,
बल्कि, ये सोचो कि कितना समय बाकी है और कितना मिल सकता है।

ये मत सोचो कि तुम फेल हो गए,
बल्कि, ये सोचो कि तुमने क्या सीखा और तुम क्या कर सकते हो।

ये मत सोचो कि तुमने क्या गलतियाँ की,
बल्कि, ये सोचो कि तुमने क्या सही किया और क्या सही कर सकते हो।

ये मत सोचो कि आज कितनी तकलीफ उठानी पड़ रही है,
बल्कि ये सोचो कि कल कितना शानदार होगा और हो सकता है।

ये मत सोचो कि क्या हो सकता था,
बल्कि, ये सोचो कि क्या है और क्या हो सकता है।

ये मत सोचो कि तुमने क्या खोया,
बल्कि, ये सोचो कि तुमने क्या पाया और क्या पा सकते हो।

नीतू सिंह
कार्यालय सहायक (आर)
(अनुबंधित)

घड़ी

शहर के नामी 'मॉल' के खुबसुरत शोरूम
में लगे पास्टर पर नज़र पड़ी,
5 लाख की घड़ी!
देखकर आंखे हो गयी बड़ी।
इससे पहले की हटाते नज़र,
खुशसूरत सी एक सेल्स–कन्या ने आ कर कहा,
'मे आई हेल्प यू' – सर?
'हेल्प' हमने कहा अंतर्मन से
मैडम....ये कैसी लूट है?
रेशमी बालों पर हाथ फिराते मैडम बोली,
सिर्फ आज के लिए,
इस शानदान घड़ी पर
5 प्रतिशत की छूट है।

हमने कहा, वाह.....ऑफर धमाकेदार है
सही घड़ी पर आए है,
हम ही इसके असली हकदार है।
जरा दिखलाईए.....
इस घड़ी में क्या है खास, ये भी बतलाईए?
इतना सुनकर मैडम मुस्कुराने लगी,
'कैल्कुलेटर' से शुरू हुई,
'कम्प्यूटर' तक के गुण गिनाने लगी।
हमने पूछा, मैडम ये घड़ी है या घंटाघर?
पहले ये बताईये, क्या ये समय बताती है?

मैडम ने ऊपर से नीचे तक देखा,
मुस्कुराते हुये बोली, समय तो 50 वाली
'लोकल' घड़ियां भी बतलाती है,
ये 'बहुमूल्य' घड़ी आपका समय
दूसरों को बताती है।
हमरे फौरन मैडम से पूछा,
तो फिर ये घड़ी हमारे काम कैसे आती है?

मैडम बोली, आप जिस भी देश में जाइए
यह वहाँ के समय में
'ऑटोमैटिक' ढल जाती है।
हमसे कहा, मैडम, आम आदमी तो कबसे ही,
समय के हिसाब से ढल रहा है,
फिर भी बाजार में उसका भाव
आम ही चल रहा है।

आम आदमी की बात सुनते ही
मैडम जोश में आई,
घड़ी वापस अपने हाथ में उठाई,
बोली जब लेनी ही नहीं
तो फिर कैसी सफाई?
हमने कहा मैडम,
आम को घड़ियों का क्या काम?
आम का तो घड़ियां ही तय करती है दाम।
मुख्य मार्ग पर लगी एक घड़ी पर,
कब से बजे है बारह,
देश में बढ़ती महंगाई का भी यही है नजारा।
समय से घंटो पीछे चल रही है घड़ियां,
देश की प्रगति की रफ्तार बता रही है,
वर्षों से बिना सुई के ही चलती घड़ियां,
देश का आर्थिक पाटन दिखा रही हैं।

सबसे पुरानी एक घड़ी पर तो,
मिनट वाली सुई ही नहीं है,
लोकतंत्र में आम आदमी की जगह,
कभी हुई ही नहीं हैं।
भ्रष्टाचार और आतंक की घड़ियों के काटें,
समय से भी आगे हो गए हैं
आम आदमी को जगाने वाली घड़ियों के अलार्म
अब खुद ही सो गए है।
मैडम, बड़ी दिक्कत है 'सिस्टम' बदहाल है,
अब तो कुछ ही घड़ियां बताती है समय
बाकी बताती देश का हाल है।
जरूरत है कि ऐसी घड़ी बनाई जाए,
प्रलय से पहले जिसका 'अलार्म' बज जाए।
आदमी को आदमी की जगह मिल जाए।
एक आर फिर वो समय आए,
अपना भारत, 'सोने की चिड़िया' कहलाए।

अवधेश सिंह
सहायक महानिदेशक (एफ.ए.)

21वीं शताब्दी में भारत

भारत विविधताओं का देश है। उत्तर एवं पूर्व में हिमालय, दक्षिण में हिन्द महासागर और पश्चिम में थार मरूस्थल से घिरा हुआ यह 32,00,000 वर्ग कि.मी. का भूभाग अपने आप में अनेक भाषाएँ, वेशभूषाएँ, खान–पान, जाति–जनजाति, धर्म व रीति रिवाज संजोए हुए है। चिरकाल में उपस्थित इस विविधता ने भारत को सदैव वैश्विक मंच पर एक विशिष्ट दर्जा दिया है।

इस विविधता और देशवासियों के सतत् परिश्रम के फलस्वरूप आज भारत विश्व की सबसे तेज गति से उभरती बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। नोटबंदी और जी.एस.टी. जैसे आर्थिक सुधारों ने विकास को गति प्रदान की है। रक्षा उत्पाद के क्षेत्र में हुई बढ़ोतरी व सैनिकों के अदम्य साहस ने भारत को न केवल दक्षिण एशिया बल्कि समस्त भारत प्रशांत में बड़ी सैन्य ताकत के रूप में मान्यता प्रदान की है।

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अनुसार, 21वीं शताब्दी 'एशियाई शताब्दी' के रूप में याद रखी जाएगी। इसलिए यह विचार करना आवश्यक है कि इस 'एशियाई शताब्दी' में भारत की भूमिका क्या हो और स्वयं भारत 21वीं सदी में किस प्रकार की ताकत के रूप में उभरकर आए।

भारत एक युवा देश है। इस वक्त विश्व में सबसे युवा भारत में है। यह भी सच है कि भारत की लगभग 20 करोड़ की आबादी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है। अपने गरीबों को मुख्यधारा में लाए बिना भारत एक वैश्विक शक्ति नहीं बन सकता। हमें अपनी युवा शक्ति को कौशल विकास के जरिए और भी सृदृढ़ करना होगा ताकि यही युवा गरीबी उन्मूलन में मुख्य भूमिका अदा करें।

वैसे तो भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और भारतीय लोकतंत्र दुनिया के विकसित एवं विकासशील देशों के लिए एक उदाहरण के रूप में उभरा है। लेकिन यह और भी आवश्यक है कि 21वीं सदी में भारत का विकास और भारत में लोकतंत्रिक अधिकारों जैसे मूलभूत अधिकार, विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सहिष्णुता, विभिन्न वर्गों में परस्पर स्नेह व सम्मान की व्याप्तता भी विकास का स्वरूप है। इसके बिना भारत की प्रगति खोखली ही कहलाएगी।

21वीं शताब्दी में यदि हमें विश्व की जिम्मेदार आर्थिक व सैन्य शक्ति का दर्जा प्राप्त करता है तो आंतरिक सुरक्षा के खतरों जैसे आतंकवाद, माओवाद, मानव तस्करी से मजबूती से निपटना होगा। आज भी कश्मीर व उत्तर–पूर्व में

अलगाववाद की भावना व्याप्त है। पाकिस्तान सीमा पर घुसपैठ की घटनाएं आम हैं। कानून व्यवस्था और भारत की अखंडता पर समझौता किए बिना भटके हुए युवाओं को मुख्यधारा में लाना इन समस्याओं का सतत् समाधान सिद्ध हो सकता है।

21वीं सदी का भारत भ्रष्टाचार मुक्त हो, भाई–भतीजावाद मुक्त हो, इसके लिए हर किसी को प्रयास करना होगा। प्रशासन में प्रचलित भ्रष्टाचार चूँकि और भी बड़ी समस्या है। प्रशासनिक अधिकारियों की नैतिक जिम्मेदारी यहाँ बढ़ जाती है। वर्तमान सरकार ने भारत को 2022 तक भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए 'संकल्प से समृद्धि' कार्यक्रम चलाया है।

इस प्रकार भारत का 21वीं सदी का रूप एक भ्रष्टाचार मुक्त, सुदृढ़ सैन्य व आर्थिक शक्ति, उच्च श्रेणी का लोकतंत्र और 'वसुधैव कुटुम्बकम' का वैश्विक उदाहरण का होना चाहिए। लेकिन यह सरल नहीं होगा। इसके लिए वर्तमान व आने वाली सरकारों के साथ–साथ प्रत्येक नागरिक को स्वयं को जिम्मेवार मानना होगा। तब जाकर ये भांति–भांति के विविधताओं वाला भारत वैश्विक बगीचे के सबसे सुन्दर फूल की तरह 21वीं शताब्दी में खिलखिलाएगा।

हरित चौधरी
सहायक अनुभाग अधिकारी
(कार्मिक)

किसान का जीवन

देखता रहता हूँ किसानों की तड़प को
फिर भी ना मिला कोई हल उनकी किस्मत को
कितना बताऊ उनके बारे में
वे तो ईश्वर है हम सबके यारों

दिनरात मेहनत करके पैदा करते है अन्न वो
फिर भी किसी को उनके पसीने पर तरस नहीं आता
वे खुद्दार होते है भीख नहीं माँगते किसी से
और देने की बात आये तो सबसे पहले वो ही होते हैं।

कितना बताऊ उनकी कमाई के बारे में
कुछ नहीं मिलता साल भर की कमाई
करते रहते हैं मेहनत वो इस भ्रम में
किसी दिन खुदा उन पर भी रहम करेगा।

कितने दिन बीत गए उनके दुखों में
पता नहीं इस बात का इन शहरों के अमीरों को
कभी–कभी पैदा करने वाला भी भूखा सो जाता है
समझ सकते हैं क्या, क्यों सो जाता है भूखा

क्योंकि कर्ज में सारी कमाई बिक जाती है उनकी
और वो फिर एक अन्न के बिना भूखे सो जाते हैं
करते रहते हैं हमारे जीवन की रक्षा वो
और हमें इस बात का पता तक नहीं

क्यों पता होगा, आपको शहरों के अमीरों
आप तो ईश्वर से कुछ विशेष अधिकार लेके पैदा हुए हो

आँखां में आँसू आ जाते है सुनकर उनकी दास्तान
फिर भी कठोर कर रखा हूँ खुद को

क्योंकि डर इस बात का है कि मेरे आँसू
देखकर कही उनकी भी हिम्मत ना टूट जाऐ।
कितनी कठिनाई सहते है आपकी भलाई के लिए
और आप हो कि एक भी हँसी का पल उनके साथ
नहीं बिता पाते।

वर्षों की मेहनत के बाद ईश्वर का आशीर्वाद
और अपनी मेहनत का ही रोना है तुम्हारे पास
लेकिन कभी सोचा है कि जो मैं खाता हूँ
उसको पैदा करने वालो के घर ईश्वर रोज दर्शन देने
आता है।

सुना है इस बार ईश्वर की पूजा बड़ी धूमधाम से हो
रही है
और ईश्वर चाहता है कि पहले तू अपने अन्नदाता की
तो पूजा कर लेता
कितनी भी ईश्वर की पूजा कर ले
जब तक किसी गरीब की
सेवा नहीं करेगा, वह तेरी भक्ति स्वीकार नहीं करेगा।

राजेश कुमार मीना
आशुलिपिक (प्रशासन)

आज ही क्यों नहीं?

एक बार की बात है कि एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर–सम्मान किया करता था। गुरु जी भी अपने इस शिष्य से बहुत स्नेह करते थे लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था। अब गुरुजी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने की पूरी सामर्थ्य होती है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता। यहाँ तक कि अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही प्रवीण हो पाता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली। एक दिन तक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा –'मैं तुम्हें एक जादुई पत्थर का टुकडा, दो दिन के लिए दे कर, कहीं दूसरे गाँव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इससे स्पर्श करोगें, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। परंतु याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुमसे वापस ले लूँगा।

शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते–करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर–चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठना पड़ेगा। फिर दूसरे दिन जब वह प्रातःकाल जागा, तो उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरूजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ जरूर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाजार से लोहे के बड़े–बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा। दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा कि अभी तो बहुत समय है। कभी भी बाजार जाकर सामान लेता आयेगा। उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात ही सामान लेने निकलूंगा, परत भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी, और उसने बजाए उठकर मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा। आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नींद की गहराइयों में खो गया और जब वह उठा तो सूर्यास्त होने को था। अब वह जल्दी–जल्दी बाजार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में उसे गुरुजी मिल गए। उनको देखते ही वह उनके चरणों में गिरकर, उस जादुई पत्थर का एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा। लेकिन गुरुजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर–चूर हो गया। परंतु इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी। उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा। वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक अभिशाप है और उसने प्रण लिया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुरायेगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन

कर दिखायेगा।

मित्रों जीवन में हर किसी को एक से बढ़कर एक अवसर मिलते है, पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवां देते हैं। इसलिए मैं यही कहना चाहता हूँ कि यदि आप सफल, सुखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान बनना चाहते है तो आलस्य और दीर्घसूत्रता को त्यागकर, अपने अंदर विवेक, कष्टसाध्य श्रम, और सतत् जागरूकता जैसे गुणों को विकसित कीजिए और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजिए –''आज ही क्यों नहीं?''

हर्ष शर्मा
सहायक महानिदेशक
(एन.जी.एस.)

सोच

सोच अपनी सही है तो सब कुछ सही जो जाता है। अपनी सोच को थोड़ा सा बदलो तो सोच की गतिविधि बढ़ जाती है। क्योंकि समय के अनुसार चलना और बढ़ते रहना चाहिए। क्योंकि समय बलवान है। भगवान समय पर ही सब कुछ देता है और लेता भी है। समय से पहले न किसी को मिला है और न मिलेगा। भाग्य में जो लिखा है। वह होकर रहेगा नहीं बदल सकता है। इंसान के रूप में ही भगवान का रूप है। भगवान को न किसी ने देखा है बल्कि कल्पना किया जाता है इसलिए भगवान के रूप में ही इंसान है।

समय जिसका साथ देता है वो बड़ो–बड़ो को मात देता हैं। अमीर के घर बैठा कौवा भी सबको मोर लगता है और गरीब का भूखा बच्चा भी सबको चोर लगता है। इंसान की अच्छाई पर खामोश रहते है, चर्चा अगर उसकी बुराई पर हो तो गूंगे भी बोल पड़ते है।

जिस व्यक्ति को आपके रिश्तों की कदर नहीं है उसके साथ खड़े रहने से अच्छा है अकेले खड़ा रहना। यह अभिमान नहीं स्वाभिमान है।

रेखा
एम.टी.एस.

मायुस बात

सुना है गरीबों की किस्मत नहीं हुआ करती,
वो तो बस हालात से बेवजह उलझ पड़ते हैं!

मुस्कुराने के मौके भी तो किश्तों में ही आते हैं
वरना गमों की पासबुक तो आसुओं की स्याही
से भरी रहती हैं!

बच्चे तो उनके भी किसी फरिश्ते से कम नहीं होते.....
बस मिट्टी से सना बदन लोगों की नजरों
से उन्हें बचा के रखता हैं.....!

चंद किताबे प्ढ़ कर वो भी जरूर कुछ बन जातें.....!
पर हमें तो बस अपने बच्चे 'देश का भविष्य'
और वो 'धरती पर बोझ' नजर आते हैं.....!

कहते हैं उनकी जुबान गंदी है और वर्ताव बुरा.....!
कभी उन काले शीशों का हटा कर तो देख
तेरा गिरेबान कितना गंदा और
ईमान कितना बुरा.....!

जमाने बदले, जमाने वाले बदल गये
मे फुटपाथ तो उतना ही रहा
बस इसमें सोने वाले बढ़ गये.....!

हमने ही उनको चोर बना दिया किसी को
कातिल तो किसी को बाजारू.....!
हम पर्दों में छिप कर अपनी इज्जत बचाते हैं,
वो ठोकर बे–आवस जूठे बर्तन उठाते वो मासूम हाथ.....!

फर्श को पौंछते और आपस में होती वो मासूम बात...!
तमाशबीन बन देखते रहते थे तमाशा.....!
ना हमें उनसे कोई मतलब था
सोचे कभी उनके हालात.....!

मैले-मन

बेखौफ जमाना तब होगा,
जब खौफ का सिर हम कुचलेगें....
जो बनकर इनसां फिरते हैं,
जब उन हैवानां को मसलेंगे....!!

नजरे सबकी हम पर न होगी,
जब हम गलियों से गुजरेगें....
रास्ता कोई खुद ही बदले,
जब हम किसी से टकरेंगे....!!

परदो में वो आप छुपेगें,
जब, हम वो–परदा निकालेगें....
तोड़ चले उन वादों को,
जो हमको खुद में जकड़ेगे....!!

बाजार ये तब वीरान होंगे,
जब ''वो'' हमको ना बेचेंगें....
मोल कोई हमारा क्या लगाये,
जब, हम मोतियो से चमकेंगें....!!

उनकी, मर्यादा क्यूं रखे....?
जो इस दामन को फूकेंगे....
अपनी मर्यादा हम तक है,
वो क्या मर्यादा समझेगे....!!

दुध सा उबाल नहीं,
अब तो लावा बनकर भड़केंगें....
मैले मन घर में छुप जाओं
वरना, खाक हर बला को कर देंगे....!!

परिंदे नहीं, अब बाज उड़ेंगें,
जब पंखों को तुम कुतरोगे....
दाना चुगना छोड़ चले,
अब बस शिकार पर निकलेंगें....!!

आकांक्षा गुप्ता
कार्यालय सहायक (वित्त अनुभाग)
(अनुबंधित)

जीवन का सत्य

आप पूरी पृथ्वी पर कारपेट नहीं बिछा सकते, किन्तु आप एक जोड़ी जूते पहनकर इसे महसूस कर सकते हैं। यह कहावत भी अच्छे नजरिये के उस पहलु को दर्शाती है कि जो हमारे पास नहीं हैं उसका रोना रोने के बजाये जो हमें कुदरत से मिला है उसी में जिन्दगी को आनंद से जियें और तृप्त रहें। जिस दिन हम अपने नजरियें में अच्छा और सकारात्मक बदलाव ले आयेंगे, उस दिन से हमारी सभी परेशानियाँ चिंताएं सब कुछ खत्म हो जायेगी।

आप जो भोजन दान करते हैं–वो पेट में चार घंटे रहता है, जो वस्त्र दान करते हैं– वो चार महीने रहता है, लेकिन जब ज्ञान का दान करते हैं तो वो अंतिम सांस तक साथ रहता है और संस्कार बनकर आपके साथ ही जाता है। ज्ञान का बीज कभी भी व्यर्थ नहीं जाता। जो है, जितना है बांटते चलो, इसी से सही मायने में सुख और शांति का अनुभव होता है। आत्मा की तृप्ति होती है। आप हर बात को सकारात्मक तरीके से देखो, सुनो और सोचो। हम जितना ज्यादा पढ़ते हैं, सुनते हैं, समझते हैं, हमें अपनी अज्ञानता का उतना ही ज्यादा अहसास होता जाता है।

दोस्तों हम सब अपना पूरा जीवन देखते–देखते ऐसे ही गुजार देते हैं, कभी ये सोचने पर जोर नहीं देते की जीवन का सत्य क्या है,? व्यर्थ ही धन के पीछे भागते रहते हैं। समस्त जीवन स्वयं में ही व्यस्त रहते हैं और अंतिम समय में भी कुछ लोग मानव जीवन के महत्व को नहीं समझ पाते। बस सर्वोत्तम पाने की इच्छा में पूरा जीवन व्यर्थ गवां देते हैं।

हर तरफ एक ही रट लग रही
मुझे सर्वोत्तम चाहिए
हर व्यक्ति दौड़–भाग रहा है

बस एक ही चीज मांग रहा है
सर जी मुझे चाहिए बेस्ट
इसके लिए मैं नहीं कर रहा रेस्ट

दौड़–धूप की भी इस आपाधापी में वह परेशान है
स्वयं को ही नहीं, दूसरों को कर रहा हैरान है
उसे इस सत्य का रह गया नहीं ज्ञान है

सर्वोत्तम सर्वोच्च शिखर की भांति है
जहां पर न है कोई वनस्पति, न कोई जीवन
केवल बर्फ से ढकी चोटियां
और निर्जन–स्त्री घाटियां

बियाबान मरूस्थल और घास के मैदान
जिनपर श्वास की कमी से जिन्दगी है परेशान
जैसे व्यंग्य कर रही है

तुम्हारी सर्वोच्चता किस काम की
जब न दे सकती जीवन किसी लाचार को
तुम तो चांद की तरह हो
जिसका मुँह टेढ़ा है
जहां पर काले–कुरूप पत्थर हैं
जो बार–बार अपने
बहुरूप से कर रहा है व्यक्ति को भ्रमित
सत्य के अन्वेषण पर यह पाया गया जीवन

हीन–संक्रमित
तो फिर क्यों नहीं कर रहे
इस सत्य को स्वीकार कि
सर्वोत्तम–सर्वोच्चता में नहीं
सरलता में है, जो
दूसरे को जीवन देने का प्रयास है
खुद दर्द सहकर दर्द दूर करने का अभ्यास है
इस शाश्वत सत्य का उद्‌घोष है
अपने लिए तो सब जीते हैं
जीवन वह है जो दूसरे के काम आए।

नूपुर शर्मा
आशुलिपिक (कार्मिक)

मेरी प्यारी माँ

मेरी प्यारी माँ तू कितनी प्यारी है
जग है अधियारा तू उजियारी है
शहद से मीठी हैं तेरी बाते
आशीष तेरा जैसे ही बरसातें

डांट तेरी है मिर्ची से तीखी
तुझ बिन जिन्दगी है कुछ फीकी
तेरी आँखां में छलकते प्यार के आँसू
अब मैं तुझसे मिलने को भी तरसूं

माँ होती है भोली भाली
सबसे सुन्दर प्यारी प्यारी

ईश्वर
एम.टी.एस.

मैं रुका रहा, रास्ते चलते रहे!

अक्सर जिन्दगी में लगता है कि हम चल रहे है, आगे बढ़ रहे है, मंजिल के करीब या दूर। पर कभी हमने ये नही सोचा कि शायद हम मूकदर्शक हो, रूके हुए एक जगह पर, स्थिर, शिथिल और रास्ता चल रहो हो अपनी गति से। मंजिल भी रास्ता तक कर रही है साथी भी।

100 साल पहले रोबर्ट ने कुछ फ्रास्ट पंक्तियां लिखी, उनका अपना दर्शन था कि उन्होंने एक रास्ता चुना, कठिन रास्ता, वही सब बदलाव का कारण बना।

Two roads diverged in a wood, I took the one less traveled by, and that has made all the difference.

पर मेरा अपना दर्शन है। जिस तरह तलवार योद्धा को चुनती है, अश्व अपने सवार को, इसी तरह रास्ता हमें चुनता है।

मैं रुका रहा, रास्ते चलते रहे।

मैं घिसटता रास्ते संग
देखता रहा बेबसी से
मित्र शत्रु अपने पराये
रास्ते पर मिलते रहे!!

मैं रुका रहा, रास्ते चलते रहे।

मंजिलों का आसरा
मैं थका, विश्राम का मन
पर रास्ता रुकता नहीं,
रात दिन ढलते रहे!!
मैं रूका रहा, रास्ते चलते रहे।

सोचता हूँ दो घडी रुक कर
बात करलू प्रियजनों से
मांग लू क्षमा, अनुपस्थिति की
बस स्वप्न मिलन के पलते रहे।।

मैं रुका रहा, रास्ते चलते रहे।

अवधेश सिंह
सहायक महानिदेशक (एफ.ए.)

जिम्मेदार

एक कम्पनी के कर्मचारी एक दिन ऑफिस पहुंचे। उन्हें गेट पर ही एक बड़ा–सा नोटिस लगा मिला, जिसमें लिखा था, 'इस कम्पनी में जो व्यक्ति आपको आगे बढ़ने से रोक रहा था, कल उसकी मृत्यु हो गयी है। हम आपको उसे आखिरी बार देखने का मौका दे रहे हैं, कृपया बारी–बारी से मीटिंग हॉल में जाएं और उसे देखने का कष्ट करें।'

जो भी नोटिस पढ़ता उसे पहले तो दुख होता, लेकिर फिर जिज्ञासा हो जाती कि आखिर वो कौन था, जिसने उसकी तरक्की रोक रखी थी? देखते–देखते हॉल के बाहर काफी भीड़ हो गयी। गार्ड उन्हें एक–एक करके अन्दर जाने दे रहा था। बाहर खड़े लोग देख रहे थे कि जो भी अंदर से वापस आ रहा है, वह काफी उदास और दुखी है, मानो उसके किसी करीबी की मृत्यु हुई हो।

इस बार अन्दर जाने की बारी एक पुराने कर्मचारी की थी। उसे सब जानते थे। सबको पता था कि उसे हर एक चीज से शिकायत रहती है, कंपनी से, बॉस से, सहकर्मियों से, वेतन से, हर एक चीज से! पर आज वो थोड़ा खुश लग रहा था। उसे लगा कि चलो जिसकी वजह से उसके जीवन में इतनी समस्याएं थी, वो गुजर गया। अपनी बारी आते ही वह तेजी से हॉल के अन्दर रखे ताबूत के पास पहुँचा और उचक कर अन्दर देखने लगा। ये क्या? ताबूत के अन्दर कोई शरीर नहीं रखा था, बल्कि एक बड़ा–सा शीशा रखा हुआ था।

उसे क्रोध आया। वह चिल्लाने को हुआ तभी उसकी नजर आईने के बगल में लिखे सन्देश पर पड़ी, 'इस दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति है, जो आपकी तरक्की रोक सकता है और वो आप खुद हैं। इस पूरे संसार में आप ही वह अकेले व्यक्ति हैं, जो आपकी जिन्दगी में क्रांति ला सकते हैं।'

यह सच है कि आपकी जिन्दगी तब नहीं बदलती, जब आपका बॉस बदलता है, जब आपके दोस्त बदलते हैं, जब आपके पार्टनर बदलते हैं, या जब आपकी कंपनी बदलती है। जिन्दगी तब बदलती है, जब आप बदलते हैं, जब आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि अपनी जिन्दगी के लिए सिर्फ और सिर्फ आप जिम्मेदार हैं।''

राजेश कुमार
परामर्शदाता (प्रशासन)

नफरत

देखो तो, अब भी कितनी चुस्त–दुरूस्त और पुरअसर है
हमारी सदी की नफरत,
किस आसानी से चूर–चूर कर देती है
बड़ी से बड़ी रूकावटों को
किस फुर्ती से झपटकर
हमें दबोच लेती है!

यह दूसरे जज़्बों से कितनी अलग है
एक साथ बूढ़ी भी और जवान भी।
यह खुद उन कारणों को जन्म देती है
जिनसे पैदा हुई थी।
अगर यह सोती भी है तो हमेशा के लिए नहीं,
निद्राहीन रातें भी इसे थकाती नहीं,
बल्कि और तर–ओ–ताजा कर जाती हैं।

यह मजहब हो या वह जो भी इसे जगा दे
यह देश हो या वह जो भी इसे उठा दे।
इंसाफ भी तभी तक अपनी राह चलता है
जब तक नफरत इसकी दिशा नहीं बदल देती।
आपने देखा है इसका चेहरा
कामोन्माद की विकृत मुद्राओं वाला चेहरा।

ओह! दूसरे जज्बात इसके सामने
कितने कमजोर और मिमियाते हुए नजर आते हैं।
क्या भाई–चारे के नाम पर भी किसी ने भीड़ जुटाई है?
क्या करूणा से भी कोई काम पूरा हुआ है?

क्या संदेह कभी किसी फसाद की जड़ बन सका है?
यह ताकत सिर्फ नफरत में है।
ओह! इसकी प्रतिभा!
इसकी लगन! इसकी मेहनत

कौन भुला सकता है वे गीत
जो इसने रचे?
वे पृष्ठ जो सिर्फ इसकी वजह से
इतिहास में जुड़े
वे लाशें जिनसे पटे पड़े हैं
हमारे शहर, चौराहे और मैदान।

मानना ही होगा,
यह सौंदर्य के नए–नए आविष्कार कर सकती है,
इसकी अपनी सौंदर्य दृष्टि है।
आकाश के बीच फूटते हुए बमों की लाली
किस सूर्योदय से कम है।
और फिर खंडहरों की भव्य करूणा
जिनके बीच किसी फूहड़ मजाक की तरह खड़ा हुआ
विजय–स्तंभ!

नफरत में समाहित हैं
जाने कितने विरोधाभास
विस्फोट के धमाके के बाद मौत की खामोशी,
बर्फीले मैदानों पर छितराया लाल खून।

इसके बावजूद यह कभी दूर नहीं जाती
अपने मूल स्वर से
खून से सने शिकार पर झुके जल्लाद से।
यह हमेशा नई चुनौतियों के लिए तैयार रहती है
भले ही कभी कुछ देर हो जाए
पर आती जरूर है।
लोग कहते हैं नफरत अंधी होती है
अंधी! और नफरत!
इसके पास तो जनाब, बाज की नज़र है
निर्निमेष देखती हुई भविष्य के आर–पार
जो कोई देख सकता है
तो सिर्फ नफ़रत।

विवेक कृष्ण वर्मा
सहायक निदेशक
(एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

कर्मों का फल

एक बार श्रीकृष्ण और अर्जुन ब्रह्माण्ड के भ्रमण पर निकले और ब्रह्माण्ड के लोगों के कार्यकलापों को देख रहे थे। तभी उनकी नज़र एक हलवाई की दुकान पर पड़ी। हलवाई ने पुराना बासी खाना दुकान के पास इकट्ठा कर रखा था। उस खाने के ढेर को देख एक कुत्ता बार–बार उसे खाने आता लेकिन हलवाई उसे पत्थर मार के भगा देता। कुत्ता जोर–जोर से रोता और फिर खाने आता, उसे फिर हलवाई भगा देता।

यह देखकर अर्जुन को दुःख हो रहा था लेकिन श्रीकृष्ण हँस रहे थे। तब अर्जुन ने आश्चर्य से उनके हँसने का कारण पूछा। तब श्रीकृष्ण ने कहा–अर्जुन! यह दुकान एक नामी हलवाई की थी। उसने अपने इस काम से बहुत धन कमाया था पर उसका नौकर चाकर और नाते रिश्तेदारों से बहुत बुरा बर्ताव था। वो सभी का बहुत अनादर करता था। ये कुत्ता वही नामी हलवाई है और इस दुकान का वर्तमान मालिक उसी का बेटा हैं जो अपने ही पिता को पत्थर मार रहा हैं। ये जो भी इस कुत्ते के साथ हो रहा है ये उसके पिछले जन्मों का फल है।

इंसान को अपने कर्मों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वो हर जन्म में अपने कर्मों का भोग करता ही है। कहावत है ''जो जैसा बोता है वैसा ही काटता है''। इंसान अपने कर्मों से बड़ा होता है। पूजा–पाठ, धार्मिक आडम्बर व्यर्थ हैं। इंसानी धर्म, सात्विक कर्म और मीठे वचन ही जीवन का आधार है।

तीन चीटियाँ

एक व्यक्ति धूप में गहरी नींद में सो रहा था। तीन चीटियाँ उसकी नाक पर आकर इकट्ठी हुई। तीनों ने अपनी प्रथा अनुसार एक दूसरे का अभिवादन किया और फिर वार्तालाप करने लगीं।

पहली चींटी ने कहा, ''मैंने इन पहाड़ों और घाटियों से अधिक बंजर जगह और कोई नहीं देखी। मैं यहाँ सारा दिन अन्न ढूँढती रही, किन्तु मुझे एक दाना तक नहीं मिला।'

दूसरी चींटी ने कहा, 'मुझे भी कुछ नहीं मिला, यद्यपि मैंने यहाँ का चप्पा–चप्पा छान मारा। मुझे लगता है कि यही वह कोमल और अस्थिर जगह है, जिसके बारे में हमारे लोग कहते हैं कि यहाँ कुछ पैदा नहीं होता।'

तब तीसरी चींटी ने अपना सिर उठाया और कहा, 'मेरी सहेलियो! इस समय हम सबसे बड़ी चींटी की नाक पर बैठे हैं, जिसका शरीर इतना बड़ा है कि हम उसे पूरा देख तक नहीं सकते। इसकी छाया इतनी विस्तृत है कि हम उसका अनुमान नहीं लगा सकते। इसकी आवाज इतनी ऊँची है कि हमारे कान इसे सुन नहीं सकते और वह सर्वव्यापी है।'

जब तीसरी चींटी ने यह बात कही तो दूसरी चीटियाँ एक–दूसरे को देख हँसने लगी।

उसी समय वह व्यक्ति नींद से हिला। चीटियाँ लड़खड़ाई और गिरने के डर से उन्होंने अपने नन्हें पंजे उसकी नाक के मास में गढ़ा दिए जिससे सोते हुए उस आदमी ने नींद में ही अपने हाथ से अपनी नाक खुजलायी और तीनों चीटियाँ पिसकर रह गई।

चितरंजन कुमार
एम.टी.एस. (प्रशासन)

कहाँ गया मेरा आँगन

हरियाली के इस आँगन में
बजा बांसुरी सूरज जब आता
वे भी अपनी राग सुनाते
निकल–निकल अपनी डालों से
अपनी उड़ान दिखलाते थे
देख–देख उनकी कलरव को
सबके मन हर्षाते थे
न जाने क्या–क्या वे कहकर
फिर मिलने को कह जाते थे
हरियाली के इस आँगन में

नन्हें–नन्हें पंखों वाले
दिन भर गिरते उड़ते रहते
गौ–माता भी धूप–छाँव में
वही आराम फरमाती थी
लगता था चौपाल वही थी
राहगीर जब रूकता था
हरियाली के इस आँगन में

आज सांझ पड़े घर को जब लौटे
उजड़ चुका था घर आँगन
खोज–खोज अपने नन्हों को
वे बेहाल हुए जाते थे
कौन दैत्य था वो ऐसा
कुल्हाड़ी संग आया था
हरियाली के इस आँगन में

नहीं राग था आज वहाँ
दुःख भरा गीत वे गाते हैं
गौ–माता भी रम्भाती हैं
युगो–युगो के इस आँगन में
कौन लील गया घर मेरा
न्याय नहीं अन्याय है ये
हरियाली के इस आँगन में।

भारत माँ का बेटा

जब मैं हाथ उठा
जय बोला था भारत माँ की,
नहीं पता था अर्थ मुझे
केवल वह एक नारा था
वो मेरा बचपन था।

जब मैं हँस उठा
जीत देख मेरे भारत की,
नहीं पता था भाव मुझे
केवल उस जीत का हर्ष हुआ था
वो मैं भारत का युवा था।

जब मैं दुःख में डूब गया
रक्तिम सीमा देख भारत की,
आज पता था अर्थ मुझे
केवल यह एक नारा नहीं था
मैं भारत माँ का बेटा हूँ।
मैं भारत माँ का बेटा हूँ।

अजीत शर्मा
प्रशिक्षु अधिकारी
आई.टी.एस–2015 बैच
(एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

मंदिर का पुजारी

एक बार की बात है कि एक समृद्ध व्यापारी जो सदैव अपने गुरु से परामर्श करके कुछ न कुछ सुकर्म किया करता था, गुरु से बोला–''गुरूदेव, धनार्जन हेतु मैं अपना गाँव पीछे जरूर छोड़ आया हूँ, पर हर समय मुझे लगता रहता है कि वहाँ पर एक ऐसा देवालय बनाया जाए जिसमें देवपूजन के साथ–साथ भोजन की भी व्यवस्था हो। अच्छे संस्कारों से लोगों को सुसंस्कृत किया जाए, अशरण को शरण मिले, वस्त्रहीन का तन ढके, रोगियों को दवा और चिकित्सा मिले। बच्चे अपने धर्म के वास्तविक स्वरूप से अवगत हो सके। यह बात सुनते ही गुरु जी प्रसन्नतापूर्वक बोले–''केवल गाँव में ही क्यों, तुम ऐसा ही एक मंदिर अपने इस नगर में भी बनवाओ।'' व्यापारी को सुझाव पसंद आया और उसने दो मंदिर, एक अपने गाँव और दूसरा अपने नगर में जहाँ वह अपने परिवार के साथ रहता था, बनवा दिए। दोनों देवालय शीघ्र ही लोगों की श्रद्धा के केन्द्र बन गये। लेकिन कुछ दिन ही बीते थे कि व्यापारी ने देखा कि नगर के लोग गाँव के मन्दिर में आने लगे हैं जबकि वहाँ पहुँचने का रास्ता कठिन है। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है?

भारी मन से वह गुरु जी के पास गया और सारा वृतांत कह सुनाया। गुरु जी ने कुछ विचार किया और फिर उसे परामर्श दिया कि वह गाँव के मंदिर के पुजारी को नगर के मन्दिर में सेवा के लिए बुला ले। उसने ऐसा ही किया। नगर के पुजारी को गाँव और गाँव के पुजारी को नगर में सेवा हेतु नियुक्त कर दिया। कुछ ही दिन बीते थे कि वह यह देखकर स्तब्ध रह गया कि अब गाँव के लोग नगर के मन्दिर की ओर रूख करने लगे हैं। अब तो उसे हैरानी के साथ–साथ परेशानी भी अनुभव होने लगी। बिना एक क्षण की देरी के वह गुरुजी के पास जाकर हाथ जोड़ कर कहने लगा –''आपकी आज्ञानुसार मैंने दोनों पुजारियों का स्थानांतरण किया लेकिन समस्या तो पहले से भी गम्भीर हो चली है अब तो मेरे गाँव के परिचित और परिजन, कष्ट सहकर और किराया–भाड़ा खर्च करके नगर के देवालय में आने लगे हैं। मुझसे यह नहीं देखा जाता।''

व्यापारी की बात सुनते ही गुरु जी सारी बात समझ गये और बोले– हैरानी और परेशानी छोड़ो। दरअसल, जो गाँव वाले पुजारी हैं, उनका अच्छा स्वभाव ही है जो लोग उसी देवालय में जाना चाहते हैं, जहाँ वे होते हैं। उनका लोगों से निःस्वार्थ प्रेम, उनके दुःख से दुखी होना, उनके सुख में प्रसन्न होना, उनसे मित्रता का व्यवहार करना ही लोगों को उनकी और आकर्षित करता है। और लोग स्वतः ही उनकी और खिंचे चले आते है। अब सारी बात व्यापारी की समझ में आ चुकी थी।

मित्रों हमें भी यह बात अच्छे से समझनी चाहिए कि हमारा व्यक्तित्व हमारे बाहरी रंग–रूप से नहीं, हमारे व्यवहार से निर्धारित होता है। बिल्कुल एक समान ज्ञान और वेश–भूषा वाले दो पुजारियों में लोग कष्ट सह कर भी उसी के पास गए जो अधिक संवेदनशील और व्यवहारी था। इसी तरह हमें चाहे जिस कार्य क्षेत्र से जुड़े हों, हमारी सफलता में हमारे व्यवहार का बहुत बड़ा योगदान होता है। हम सभी को इस परम सत्य का बोध होना चाहिऐ कि इस धरती पर मात्र अपने लिए ही नहीं आये हैं, हमें अपने सुख–दुःख की चिंता के साथ–साथ दूसरों के दुख–सुख को जरूर बांटना चहिए, उनसे मित्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए ताकि हम जहाँ पर उपस्थित हों, वहाँ पर स्वतः ही एक अच्छा वातावरण बना रहे और सकारात्मकता की तरंगों से हमारा जीवन–सागर लहलहाता रहे।

राजेश त्रिपाठी
सहायक महानिदेशक (एन.जी.एस.)

मेरी गुरू माँ

मेरी माँ संवेदना है, भावना है अहसास है
मेरी माँ जीवन के फूलों में खुशबू का वास है।

मेरी माँ रोते हुए बच्चे का खुशनुमा पलना है,
मेरी माँ मरूथल में नदी या मीठा सा झरना है।

मेरी माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है
मेरी माँ पूजा की थाली है, मंत्रों का जाप है।

मेरी माँ आँखों का सिसकता हुआ किनारा है
मेरी माँ गालों पर पप्पी है, ममता की धारा है।

मेरी माँ झुलसते दिलों में कोयल की बोली है
मेरी माँ मेहँदी है, कुमकुम है, सिंदूर है, रोली है।

मेरी माँ कलम है, दवात है, स्याही है,
मेरी माँ मेरा ईश्वर है, मेरा गुरूर है।

मेरी माँ भगवान के बाद मेरा खजाना है।
मेरी माँ परमात्मा की स्वयं एक गवाही है।

मेरी माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है
मेरी माँ फूँक से ठंडा किया हुआ कलेवा है।

मेरी माँ चूड़ी वाले हाथों के मजबूत कंधों का नाम है
मेरी माँ काशी है, काबा है, चारों धाम है।

मेरी माँ चिंता है, याद है, हिचकी है
मेरी माँ बच्चे की हर चोट पर सिसकी है।

मेरी माँ चुल्हा–धुँआ–रोटी और हाथों का छाला है,
मेरी माँ जिन्दगी की कड़वाहट में अमृत का प्याला है।

मेरी माँ पृथ्वी है, जगत है, धूरी है
मेरी माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है।

मेरी माँ मेरे हर दर्द की दवा है।
मेरी माँ हर समय हर दुख से बचाने वाली ढ़ाल है।

राकेश बेदी
सलाहकार (आई.टी.)

तमाचा

अपनी नई नवेली दुल्हन पूजा की शादी के दूसरे दिन ही दहेज में मिली नई चमाचमाती गाड़ी से शाम को समीर लॉन्ग ड्राइव पर लेकर निकला। गाड़ी बहुत तेज भगा रहा था, पूजा ने उसे ऐसा करने से मना किया तो बोला–अरे प्रिय। मजे लेने दो, आज तक दोस्तों की गाड़ी चलाई है, आज अपनी गाड़ी है सालों की तमन्ना पूरी हुई है। मैं तो खरीदने की सोच भी नहीं सकता था, इसलिए तुम्हारे पिताजी से मांग करी थी। पूजा बोली :– अच्छा म्यूजिक तो कम रहने दो। आवाज कम करते हुए पूजा बोली। तभी अचानक गाड़ी के आगे एक भिखारी आ गया,बड़ी मुश्किल से ब्रेक लगाते, पूरी गाड़ी घुमाते समीर ने बचाया मगर तुरंत उसको गाली देकर बोला–अबे मरेगा क्या भिखारी साले, देश को बर्बाद करके रखा है तुम लोगों ने। तब तक पूजा गाड़ी से निकलकर उस भिखारी तक पहुँची। भिखारी बेचारा अपाहिज था। उससे माफी मांगते हुए और पर्स से 100रु० निकालकर उसे देकर बोली–माफ करना काका, वो हम बातों में.....कही चोट तो नहीं आई? ये लीजिए हमारी शादी हुई है, मिठाई खाइएगा और आशीर्वाद दीजिएगा, कहकर उसे साइड में फुटपाथ पर ले जाकर बिठा दिया। भिखारी दुआएं देने लगा। गाड़ी में वापस बैठी पूजा से समीर बोला :– तुम जैसों की वजह से इनकी हिम्मत बढती है। भिखारी को मुंह नहीं लगाना चाहिए, पूजा मुस्कराते हुए बोली – समीर, भिखारी तो मजबूर था इसलिए भीख मांग रहा था वरना सब कुछ सही होते हुए भी लोग भीख मांगते हैं दहेज लेकर। जानते हो खून पसीना मिला होता है गरीब लड़की के माँ–बाप का इस दहेज में और लोग... तुमने भी तो पापा से गाड़ी मांगी थी तो भिखारी कौन हुआ? वो मजबूर अपाहिज या...??.

एक बाप अपने जिगर के टुकड़े को 20 सालों तक संभालकर रखता है। दूसरे को दान करता है जिसे कन्यादान 'महादान' तक कहा जाता है ताकि दूसरे का परिवार चल सके। उसका वंश बढे और किसी की नई गृहस्थी शुरू हो, उस पर दहेज मांगना भीख नहीं तो क्या है बोलो....? कौन हुआ भिखारी वो मजबूर या तुम जैसे दूल्हे। समीर एकदम खामोश नीची नजरें किए शर्मिंदगी से सब सुनता रहा क्योंकि पूजा की बातों से पड़े तमाचे से उसे बता दिया था कि कौन सममुच का भिखारी है?

अमरदीप
कनिष्ठ अनुवादक

पिता क्या है ?

पिता एक उम्मीद है, एक आस है
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है
उसके दिल में दफन कई मर्म हैं।

पिता संघर्ष की आंधियों में हौसलों की दीवार है
परेशानियों से लडने को दो धारी तलवार है,
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है
नींद आए तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है।

पिता जिम्मेवारियों से लदी गाड़ी का सारथी है।
सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी है,
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है
इसी से तो माँ अैर बच्चों की पहचान है।

पिता जमीर है, पिता जागीर है
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है,
कहने को सब ऊपर वाला देता है
पर खुदा का ही एक रूप पिता का शरीर है।

जितेन्द्र कुमार मीणा
निजी सहायक (एफ.एन.)

खुश रहने वाले लोगों की 7 आदतें

दोस्तों, खुश रहना मनुष्य का जन्मजात स्वभाव होता है। आखिर एक छोटा बच्चा अक्सर खुश क्यों रहता है? क्यों हम कहते हैं कि बचपन के दिन अच्छे दिन होते हैं? क्योंकि हम पैदाईशी खुश होते हैं, पर जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं हमारा वातावरण, हमारा समाज हमारे अन्दर विचारों की अशुद्धता घोलना शुरू कर देता है और धीरे–धीरे उस अशुद्धता का स्तर इतना बढ़ जाता है कि खुशी उदासी में बदलने लगती है।

पर ऐसा सबके साथ नहीं होता है। दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपनी खुश रहने की प्रवृत्ति को बचाए रख पाते हैं और जीवन भर खुशहाल रहते हैं। खुश रहने वाले लोगों की 7 आदतों का विवरण इस प्रकार है:

1. खुश रहने वाले अच्छाई खोजते हैं बुराई नहीं :

मानव की प्रवृत्ति होती है कि वो नकारात्मकता को जल्दी ग्रहण करते हैं। मनोवैज्ञानिक इस प्रवृत्ति को 'नकारात्मकता पूर्वाग्रह' कहते हैं। अधिकतर लोग दूसरों में जो कमी होती है उसे जल्दी देख लेते हैं और अच्छाई की तरफ उतना ध्यान नहीं देते पर खुश रहने वाले तो हर एक चीज में, हर एक अवस्था में अच्छाई खोजते हैं, वो ये मानते हैं कि जो होता है अच्छा होता है। किसी भी व्यक्ति में अच्छाई देखना बहुत आसान है, बस आपको खुद से एक प्रश्न करना है, कि, 'आखिर क्यों यह व्यक्ति अच्छा है?'' और यकीन जानिये आपका मस्तिष्क आपको ऐसी कई अनुभव और बातें गिना देगा कि आपको उस व्यक्ति में अच्छाई दिखने लगेगी।

एक बात और, आपको अच्छाई सिर्फ लोगों में ही नहीं खोजनी हैं, बल्कि हर एक स्थिति में आपको सकारात्मक रहना है और उसमें क्या अच्छा है ये देखना है। उदाहरण के लिए, अगर आप किसी नौकरी साक्षात्कार सें चयनित नहीं हुए तो आपको ये सोचना चाहिए कि शायद भगवान ने आपके लिए उससे भी अच्छी नौकरी रखी है जो आपको देर–सबेर मिलेगी, और आप किसी अनुभवी व्यक्ति से पूछ भी सकते हैं, वो भी आपको यही बताएगा।

2. खुश रहने वाले माफ करना जानते हैं और माफी माँगना भी :

हर किसी का अपना–अपना ईगो होता है, जिसको जाने–अनजाने, औरों द्वारा ठेस पहुँचाई जा सकती है। परन्तु खुश रहने वाले छोटी–छोटी बातों को दिल से नहीं लगाते वो माफ करना जानते हैं, सिर्फ दूसरों को नहीं बल्कि खुद को भी। और इसके उलट यदि ऐसे लोगों से कोई गलती हो जाती है तो वो माफी मांगने से भी नहीं कतराते। वो जानते हैं कि व्यर्थ का अहम उनकी जिंदगी को पेचीदा बनाएगा इसलिए वो 'क्षमा मांगने' में कभी कंजूसी नहीं करते। मुझसे भी जब गलती होती है तो मैं कभी उसे सही ठहराने की कोशिश नहीं करता और उसे स्वीकार करके क्षमा मांग लेता हूँ।

माफ करना और माफी मांगना आपके दिमाग को हल्का करता है, आपको बेकार की उलझन और परेशान करने वाली विचारों से बचाता है और परिणामस्वरूप आप खुश रहते हैं।

3. खुश रहने वाले लोग अपने चारों तरफ एक मजबूत समर्थन सिस्टम बनाते हैं:

ये समर्थन सिस्टम दो स्तंभों पर टिका होता है, परिवार और मित्रों पर। जिन्दगी में खुश रहने के लिए परिवार और मित्रों का बहुत बड़ा योगदान होता है। भले आपके पास दुनिया भर की दौलत हो, शोहरत हो लेकिन अगर परिवार और मित्र नहीं है तो आप ज्यादा समय तक खुश नहीं रह पायेंगे।

हो सकता है ये आपको बड़ी साधारण सी बात लगे, ये लगे की आपके पास भी बड़े अच्छे दोस्त है और बहुत प्यार करने वाला परिवार है, लेकिन इस पर थोड़ा गंभारता से सोचिये। आपके पास ऐसे कितने मित्र हैं, जिन्हें आप बिना किसी झिझक के रात के 3 बजे भी फोन कर के उठा सके या कभी भी वित्तीय सहायता ले सकें?

एक मजबूत संबंध बनाने के लिए आपको अपने हितों से ऊपर उठ कर देखना होता है। दूसरे की परवाह करनी होती है, और उन्हें वास्तव में पसंद करना होता है। जितना हो सके अपने रिश्तों को बेहतर बनाएं, छोटी–छोटी चीजें जैसे कि जन्मदिन की बधाई देना, सच्ची प्रशंसा करना, मुस्कुराते हुए मिलना, गर्मजोशी से हाथ मिलाना, गले लगाना संबंधों को प्रगाढ़ बनाता है और जब आप ऐसा करते हैं तो बदले में आपको भी यही मिलता है और आपकी जिन्दगी को खुशहाल बनाता है।

4. खुश रहने वाले अपने मन का काम करते हैं या जो काम करते हैं उसमें मन लगाते हैं :

यदि आप अपनी पसंद का काम करते है तो निश्चित रूप से वो आपके खुशी को बढ़ाएगा, लेकिन ज्यादातर लोग इतने भाग्यशाली नहीं होते, उन्हें ऐसी नौकरी या व्यवसाय में लगना पड़ता है जो उनकी हिसाब से नहीं होती। पर खुश रहने वाले लोग काम करते हैं उसी में अपना मन लगा लेते है, भले ही समांतर रूप में वो अपना पसंदीदा काम पाने का प्रयास करते रहे।

मैंने कई बार लोगों को जहाँ नौकरी करते हैं उस कंपनी की बुराई करते सुना है, अपने काम को दुनिया का सबसे बेकार काम कहते सुना है, ऐसा करना आपकी जिन्दगी को और भी कठिन बनया है। खुश रहने वाले अपने काम की बुराई नहीं करते, वो उसके सकारात्मक पहलुओं पर फोकस करते हैं और उससे आनंद उठाते हैं।

मगर, यहाँ मैं यह जरूर कहना चाहूँगा कि यदि हम दुनिया के सबसे खुशहाल लोगों को देखें तो वा वही लोग होंगे जो अपनी पसंद का काम करते हैं, इसलिए यदि आप जो कर रहे हैं उसका भरपूर आनंद जरूर उठाएं

5. खुश रहने वाले हर उस बात पर यकीन नहीं करते जो उनके दिमाग में आती हैं:

वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे दिमाग में हर रोज 60,000 विचार आते हैं, और एक आम आदमी के मामले में इनमें से अधिकतर विचार नकारात्मक होते हैं। अगर आप प्रतिदिन अपने दिमाग में हजारों नकारात्मक विचार लाएंगे तो खुश रहना तो मुश्किल होगा ही।

इसलिए खुश रहने वाले व्यक्ति दिमाग में आ रहे बुरे विचारों को अधिक देर तक पनपने नहीं देते। वो संदेह–लाभ देना जानते है, वो जानते हैं कि हो सकता है जो वो सोच रहे हैं वो गलत हो, जिसे वो बुरा समझ रहे हैं वो अच्छा हों ऐसा कर के इंसान शांत हो जाता है, दर असल हमारे सोच के हिसाब से दिमाग में ऐसे केमिकल रीलिज होते हैं जो हमारे मूड को खुश या दुखी करते हैं। जब आप नकरात्मक विचारों को सच मान लेते हैं तो आप का रक्तदाब बढ़ने लगता है और आप बेचैन हो जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ जब आप उस पर संदेह करते हैं तो आप अनजाने में ही दिमाग को शांत रहने का

संकेत दे देते हैं।

6. खुश रहने वाले व्यक्ति अपने जीवन या काम को किसी बड़े उद्देश्य से जोड़ कर देखते हैं:

एक बार एक बूढ़ी औरत कहीं से आ रही थी कि तभी उसने तीन मजदूरों को कोई ईमारत बनाते देखा। उसने पहले मजदूर से पूछा, 'तुम क्या कर रहे हो?', देखती नहीं मैं ईंटें ढो रहा हूँ'', उसने जवाब दिया।

फिर वो दूसरे मजदूर के पास गयी और उसने भी वही पश्न किया, ''तुम क्या कर रहे हो?'', ''मैं अपने परिवार का पेट पालने के लिए मेहनत–मजदूरी कर रहा हूँ? उत्तर आया।

फिर वह तीसरे मजदूर के पास गयी और पुनः वही प्रश्न किया, 'तुम क्या कर रहे हो''?

उस व्यक्ति ने उत्साह के साथ उत्तर दिया, 'मैं इस शहर का सबसे भव्य मंदिर बना रहा हूँ'।

आप अंदाजा लगा सकते हैं कि इन तीनों में से कौन सबसे अधिक खुश होगा!

दोस्तों, इस मजदूर की तरह ही खुश रहने वाले व्यक्ति अपने काम को किसी बड़े उद्देश्य से जोड़ कर देखते हैं, और ऐसा करना वाकई उन्हें अपार खुशी देता है।

7. खुश रहने वाले व्यक्ति अपनी जिन्दगी में होने वाली चीजों के लिए खुद को जिम्मेदार मानते है:

खुश रहने वाले व्यक्ति जिम्मेवारी लेना जानते हैं। अगर उनके साथ कुछ बुरा होता है तो वो इसका दोष दूसरों को नहीं देते हैं, बल्कि खुद को इसके लिए जिम्मेदार मानते हैं। उदाहरण के लिए अगर वो कार्यालय के लिए लेट होते हैं तो ट्रैफिक जाम को नहीं कोसते बल्कि ये सोचते हैं कि थोड़ा पहले निकलना चाहिए था।

अपनी सफलता का श्रेय दूसरों को भले दे दें लेकिन अपनी असफलता के लिए खुद को जिम्मेदार मानें। जब आप अपने साथ होने वाली बुरी चीजों के लिए दूसरों को दोष देते हैं तो आपके अन्दर क्रोध आता है, पर जब आप खुद को जिम्मेदार मान लेते हैं तो आप थोड़ा निराश होते हैं और फिर चीजों को सही करने के प्रयास में जुट जाते हैं। मैं खुद भी अपने जीवन में होने वाली हर एक अच्छी–बुरी चीज के लिए खुद को जिम्मेदार मानता हूँ। ऐसा करने से मेरी ऊर्जा दूसरों में कमी खोजने की जगह खुद में सुधार करने में लगती है, और अंततः मेरी खुशी को बढ़ाती है।

दोस्तों हो सकता है आप इनमें से कुछ बातों को पहले ही अनुसरण करते हो, आंशिक या शायद पूरी तरह से। पर यदि किसी भी आदत में थोडा सा भी सुधार करेंगे तो वो निश्चित रूप से आपकी खुशी को बढ़ाएगा।

अंत में मेरा इतना ही कहना है कि हम सब एक खुशहाल जीवन जीने का प्रयास करें।

नरेश सैनी
कार्यालय सहायक (कार्मिक)
(अनुबंधित)

न मैं हूँ महान..... न तुम हो महान

छिड़ी हुई है हाथ की उंगलियो में लड़ाई
चारों कर रही है, अपनी महत्वता की अगुवाई

मध्यमा बोली, मैं हूँ महान
कद में हूँ ऊँची, तुम करो सम्मान
हो तुम मेरे पहरेदार
मेरी रक्षा, तुम्हारा है काम

कनिष्ठा बोली, जरा करो नमस्कार
मेरे पीछे, दिखते हो तुम चार..
कद में चाहे, मैं छोटी हूँ,
लेकिन, प्रथम मैं आती हूँ।

कनिष्ठा पर हंसती, अनामिका
बोली मैं हूँ, सौन्दर्य की मलिका
मुझपे चढ़ता अंगुठी का ताज
रिश्तों को मिलता, मुझसे नाम।

नाम के तर्क पर, तर्जनी बोली
मुझसे उपयोगी, तुम में से कोई नहीं
मैं दर्शाती, मैं दिखाती, आदेश देना है मेरा काम
इसीलिए मैं हूँ, सब में महान

चुपचाप अलग किनारे बैठा
आया अंगुठा, किया सवाल
क्या कभी है, तुम सबने सोचा
मेरे बिना, क्या कोई काम होता
न उठा पाते, कोई सामान
न नल बंद करना होता, इतना आसान

खिसिया के अंगुठे से बोली उंगलियां
क्या तुम्हें लगता है तुम हो महान

अंगूठा बोला.....
ना मैं हूँ महान.... न तुम हो महान
हमारा साथ ही है, हमारा अभिमान
जो न होता हम में से कोई पांच
तो नहीं बन पाता, सुंदर हाथ।

नीतू सिंह
कार्यालय सहायक (आर)
(अनुबंधित)

स्वच्छ एवं समृद्ध भारत

जय–जय हे भारत महान
स्वच्छता है, जिसकी शान,
समृद्धि में बसता जिसके प्राण.....।
जय–जय हे भारत महान.....
जये–जये हे भारत महान.....।
.....अशोक चक्र है जिसकी शान.....
जय–जय हे,
भारत महान.....

नेतृत्व की शान है.....
महापुरुषों का यहाँ मान हैं.....।
स्वच्छता, संपन्नता, पुण्यता
महान है.....
अशोक–चक्र शान है.....
स्वच्छ, समृद्ध महान् है.....
स्वच्छ, समृद्ध भारत महान हैं.....
जय–जय हे भारत महान.....
स्वच्छता है जिसकी शान
जय–जय हे.....
.....अशोक–चक्र है जिसकी शान.....
अशोक चक्र है जिसकी.....
ताज हिमालय.....शान सिंधु.....
ताल–तलैया.....गाते मधुवाणी.....
आज का भारत महान है.....
विश्व पटल का गान हमारा.....
है जहां में नेतृत्व हमारा.....
प्रशासन की गाथा है.....
सदियों से महान सदाव्रत.....
वीरों की यहां विख्याता है.....।

चले अग्रपथ पे आगे.....
सभी राष्ट्रों की अग्रेता.....।
ब्रिक्स सम्मेलन, जलवायु–परिवर्तन,
हर समस्या का हल होत है,
है देशों में मान बड़ा अब,
सभी राष्ट्रों की अग्रेता हैं.....।
प्रधानमंत्री के आशीर वचनों से,
दुनिया चलती सह–नियमों से,
मिलजुल कर चलना है.....।
आओ चले विकास–पथ पर,
उज्जवला–योजना, किसान कर्ज माफी,
हर एक योजना लाना है
विकास के कर्तव्य–पथ पर
हाथ मिला कर चलना है.....।।

जय–जय हे भारत महान्.....।
स्वच्छता है, जिसकी शान.....
जय–जय हे,.....
समृद्धि में बसता जिसके प्राण
अशोक–चक्र है जिसकी शान
जय–जय हे, भारत.....।

चलना है अब साथ मिलकर,
भारत को स्वच्छ बनाना है.....।
नदी–नाले सड़कें, नव–ताल,
गली–कूँचें, नगर, धाम

न करना है देसी आयाम
स्वच्छता से पहले आराम
चमके देश के हर गाँव,
स्वच्छता का पोशाक,
आओ मिल के पर्व मनायें,
अपने हिन्दुस्तान को समृद्ध बनाये.....।
स्वच्छता का धर्म बनाये.....
ऐसा देश को बनाये.....
ताल–तलैया, नवतरू गाये.....।
जय–जय हे भारत महान.....
अशोक–चक्र है जिसकी शान
जय–जय हे.....।।

आज देश की शान है
सुरक्षा–दल अभियान है.....।
1962 से आज का भारत महान है.....।
थर्राते हैं दुश्मन सारे.....
है अभिमान आज के सैन्य पर.....।
वायु, जल, थल, दुरूस्त हमारे,
करते हैं शत्रु के वारे–न्यारे
सोचता है चीन, पाक अब
किधर ले जाये शत्रुता तब,
ये तो महान भारत है.....
सदियों से वीरों का व्याख्याण है.....।
''आर्याव्रत'' सोने की चीड़िया.....
आज हो चला विश्व–महान.....।

जब गाते हैं भारत का गान.....
जब गाते हैं.....
हमारा भारत देश महान
जय–जय हे भारत महान.....
अशोक चक्र है जिसकी शान.....
जय–जय हे भारत महान.....
जय–जय हे भारत महान!
जय–जये हे भारत.....।

शिक्षा का पुरातन् दायित्व.....
चन्द्रगुप्त के मानों से.....
शिक्षा का दान किये तक्षशिला.....
दुनिया के महानों को.....
हुये राजा–रानी महान यहाँ.....
मिट्टी है बलिदानों की.....
जय–जय हे भारत महान
जय–जय हे भारत.....।

अशोकचक्र है जिसकी शान.....
जय–जय हे भारत महान.....
जय–जय हे भारत महान
जय–जय हे भारत.....।

जिसकी चली है विजय–गर्जना
शस्य–श्यामला पुलकित यामिनि
द्रूम–दल शोभिनी.....
वसंत धरिणी.....
मतामयी भारत साधीनी.....
ज्ञानता का उग्र समावेश अब.....

छाया है शिक्षालयों में
आया है समृद्ध–शालीनी
''आर्याव्रत'' को हर्षाया है.....
''आर्याव्रत'' को हर्षाया है
समृद्ध–शालीनी, स्वच्छ धारिणी.....
मुकुट धारिणी.....
सिंधु संभारिणी.....।
पाँव–पग पखेरु पखारे समुद्र.....
ईश्वरीय शक्ति–दायिनी.....
मतामयी भारत–मातृत्व कमायनी.....
जय–जय हे भारत–विधाता.....
रूह पुकारिणी, ''भारत–माता''

जय–जय हे भारत महान.....
स्वच्छता है, जिसकी शान.....
समृद्धि में बसता जिसके प्राण
जय–जय हे भारत महान
जय–जय हे भारत.....।

अशोकचक्र है जिसकी शान.....
जय–जय हे भारत महान.....
जय–जय हे भारत महान
जय–जय हे भारत.....।
अशोकचक्र है जिसकी शान.....
जय–जय हे भारत महान.....

नित–नित अभियानों की बेला.....
कार्यकर्ताओं का अति–शुभ–बेला.....
स्वच्छता की अलख जगाओ
आओ मिलके स्वच्छता, समृद्धता.....
का महापर्व मनाये.....
मन अति–हर्षित शुभग्रवित
हुये जायें.....
स्वच्छता का पर्व मनाये
स्वच्छता का पर्व मनाये.....।

है नव कुंज अभियानों की बेला.....
नव–विचार नव प्रचार
नीत–नये, नये माननीय प्रधानमंत्री जी
की अभिलाषा.....
देश को आगे ले जाने की.....
महानतमृ, नीवनतम लालसा.....
दो को मिले लक्ष्यों की
उत्कट अभिलाषा.....
मेट्रो व बुलेट ट्रेनों की
सौगातें.....
ढ़ेरों सारी.....स्वच्छता की
बातें.....
तब आयेगा परिवर्तन हर ओर
चमके कार्यस्थल.....कार्यालयों की होर
हर एक में आये जागरूकता.....
तब जाये राष्ट्र में भावुकता.....
मिल के सारे समृद्धि लाये.....
नवतरू, तल, तलैया गाये.....
भारत को महान बनाना है
भारत को.....।

नित नये अभियान.....
चलाना है.....
भारत को समृद्ध बनाना है.....
जय–जय भारत देश महान.....
अशोक–चक्र है जिसकी शान
जय–जय भारत देश महान.....।
जय–जय हे भारत महान.....
जय–जये हे भारत.....।

अशोक चक्र है जिसकी शान.....
जय–जय हे भारत महान.....
जय–जय हे भारत महान
जय–जय हे भारत.....।
अशोक चक्र है जिसकी शान.....
जय–जय हे भारत महान.....

नित नये अभियान चलाना है.....
भारत को समृद्ध बनाना है.....
जय–जय भारत देश महान.....
अशोक चक्र है जिसकी शान
जय–जय भारत देश महान
जय जय भारत देश महान.....

नेतृत्व की जहाँ शान हैं.....
इस अमरबेला से महान है.....
भारत की महानता शान है.....
स्वच्छ, समृद्ध भारत महान है.....
आर्यावर्त महान है.....।

जय–जय भारत देश महान.....
जय–जय भारत देश महान.....
स्वच्छता है जिसकी शान
जय–जय हे भारत देश
महान.....।
जय–जय हे भारत.....
देश महान.....।
नेतृत्व है जिसकी शान.....।
हर साधन से परिपूर्ण महान
जय–जय भारत देश महान.....
स्वच्छता है जिसकी शान
जय–जय हे भारत देश।

निर्भय कुमार मिश्रा
आशुलिपिक
(आई.टी./एन.आर)

जिन्दगी

किसी की मजबूरियों पे न हँसिये,
कोई मजबूरियाँ खरीद कर नहीं लाता...।

डरिये वक्त की मार से,
बुरा वक्त किसी को बताकर नहीं आता..।

अंकल कितनी भी तेज हो,
नसीब के बिना नहीं जीत सकती...।।

बीरबल अकलमंद होने के बावजूद,
कभी बादशाह नहीं बन सका.....।।''
ना तुम अपने आप को गले लगा सकते हो,
ना ही तुम अपने कंधे पर सिर
रखकर रो सकते हो।

एक दूसरे के लिए जीने का नाम ही जिन्दगी है
इसलिये वक्त उन्हें दो जो
तुम्हें चाहते हों दिल से।
रिश्ते पैसों के मोहताज नहीं होते क्योंकि कुछ
रिश्ते मुनाफा नहीं देते पर
जीवन अमर जरूर बना देते हैं

आपके पास मारुति हो या बीएमडब्ल्यू–
सड़क वही रहेगी।

आप टाइटन पहने या रोलेक्स –
समय वही रहेगा।

आपके पास मोबाइल एप्पल का हो या सेमसंग–
आपको कॉल करने वाले लोग नहीं बदलेंगे।

आप इकॉनामी क्लास में सफर करें
या बिजनेस में –
आपको समय तो उतना ही लगेगा।

एक सत्य ये भी है कि धनवानों को आधा धन
तो ये जताने में चला जाता है
कि वे भी धनवान हैं।

कमाई छोटी या बड़ी हो सकती हैं.....
पर रोटी का साईज लगभग
सब घर में एक जैसा ही होता है।

शानदार बात
बदला लेने में क्या मजा है
मजा तो तब है जब तुम
सामने वाले को बदल डालो...।

इंसान की चाहत है कि उड़ने को पर मिले,
और परिंदे सोचते हैं कि रहने को घर मिले...।
''इसलिए कहा जाता है–
बसना है तो.....
हृदय में बसो किसी के...!
दिमाग में तो.....
लोग खुद ही बसा लेते है...!!

नीलम
कार्यालय सहायक (एम.आर.ए.)
(अनुबंधित)

साथ का महत्व

एक बार संख्या 9 ने 8 को थप्पड़ मारा.....
8 रोने लगा.....
पूछा मुझे क्यों मारा.....
9 बोला
मैं बड़ा हूँ इसलिए मारा.....
सुनते ही 8 ने 7 को मारा.....
और 9 वाली बात दोहरा दी....
7 ने 6 को.....
6 ने 5 को.....
5 ने 4 का.....
4 ने 3 को.....
3 ने 2 को.....
2 ने 1 को.....
अब 1 किसको मारे 1 के नीचे 0 था.....!

1 ने उसे मारा नहीं
बल्कि प्यार से उठाया
और उसे अपनी बगल में बैठा लिया

जैसे ही बैठाया.....
उसकी ताकत 10 हो गयी....!
और 9 की हालत खराब हो गई,

जिन्दगी में किसी का साथ काफी हैं,
कंधे पर किसी का हाथ काफी हैं,
दूर हो या पास.....क्या फर्क पड़ता हैं,

''अनमोल रिश्तों''
का तो बस ''एहसास'' ही काफी हैं।

नीलम
कार्यालय सहायक (एम.आर.ए.)
(अनुबंधित)

प्रेरणा

फलों से नित हँसना सीखो, कोयल से नित गाना
तरु की झुकी डालियों से तुम सीखों शीश झुकाना।

सूर्य की किरणें जिस भाँति करती है उजाला
अपने मन का अंधियारा दूर कर
जगमक कर दो यह जगत सारा।

तुम अभी बच्चे हो, कोमल एवं मासूम
अपनी किलकारी की गूँज भर दो यह आँगन सारा।

तुम्हारी यह सरल मुस्कान अचानक से
खुशी तो कभी नाराज होना
खेल खेल में शैतानी अद्भभुत है, इसे संजोए रखना।

इन नन्हे हाथों में ताकत है विश्व परिवर्तन की
ठान ले जो मन में क्षमता है हर लक्ष्य प्राप्त करने की।

स्वामी विवेकानंद की सीख लेकर डटकर करो अध्ययन
और एक कुशल छात्र की भाँति अध्यापक का करो नमन!

श्रम नहीं शिक्षा का समय है ये
नित नये सपने देखने का समय है ये
कलाम की कलम को करो सलाम
मलाला का समर्पण है सबके लिए वरदान।

सक्षम हो तुम सभी नए कीर्तिमान स्थापित करने में
यह पल, यह सदी केवल तुम्हारी है
संकल्प से सीधी करने की अब तुम्हारी बारी है!

पर्णिका शर्मा
सुपुत्री श्री शैलेन्द्र कुमार शर्मा
उप महानिदेशक(एस.एन.)

गुटखा

मात्र एक गुटखा, आदमी की अर्थी उठवा देता है।
खाने वालो को विभिन्न रोगों की लहर लगा देता है।।

गाँव–गाँव और गली–गली फैल गया इसका जहर।
संसार की सर्वाधिक बिक्री वाला यह स्वादिष्ट जहर।।

धूम मचा दे, रंग जमा दे, जीते जी अर्थी उठवा दे।
जिन्दो की अर्थी उठवाये, फिर भी बेवकुफ गुटखा खाये।।

अक्ल का अंधा खाने वाला, जहर खरीद कर खाता जाये।
गांठ का पूरा बनाने वाला, जहर बेच कर माल कमाये।।

तलब–समय राज, उफन, उठान, काल पसंद इसके नाम है।
जिसमें जितना जहर है उसके उतने ही कम दाम है।।

हंसकर कहता है गुटखा सबसे, जितना मैं सर्वव्यापी हूँ।
हे मुर्ख! खाने वालो, मैं यमराज की कार्बन कापी हूँ।।

हे सेहत के साक्षात सर्वनाशी, हे परिवार के बदनाम दाग।
है मुख केसर के आदि, देश का बना दिया पीक दान।।

महंगा नहीं तुम सस्ता खाओ, दस खाते हो तो बीस खाओ।
शार्ट कट रास्ता अपनाओ, अपनी अर्थी खुद उठवाओ।।

हमारा नवीनतम पता मसाला/गुटखा, मुत्युदत्त गुटखा
यमलोक हाऊस, शमशान घाट, जिला परलोक
प्रो० काल भैरव

सात अंक की महिमा

बात बताऊँ सुन लो, ये बड़े पते की बात
बार सात हफ्ते में और अंको में शुभ सात

मन को जो मोह लेता वो तो संगीत है
संगीत जीवन प्यारे, जीवन ही गीत है
गीतों में सरगम हैं और सरगम में सुर सात

सात समुद्र जग में महाद्वीप सात हैं
फिर से जो बन ना पाए वो अजूबे सात हैं
सप्तऋषि मंडल में, तारे है सात

गुरू द्रोण ने जो चक्रव्युह रचाया था
अभिमन्यु ने अकेले तोड़ के दिखाया था
मार गिराये निहत्था, तब बलशाली थे सात

राम चरित्र को भी सात काण्डों में बांटे
सात फेरों से प्रणय सूत्र में बंध जाते
प्यारे इन्द्रधनुष में भी देखों रग हैं सात

सात दिनों के कान्हा, पूतना को मारे थे
सात दिनों तक पर्वत, अंगुली पे धारे थे
सात जन्म तक पाएं, प्रभु तुम्हारा ''आशीर्वाद''

श्रीमती ऊषा कुमारी
टेलिफोन सुपरवाइजर
(वित्त अनुभाग)

कहते हैं

जो बिगड़ी को बनाते हैं, उसे भगवान कहते हैं।

जो मुसीबत में काम आये, उसे इन्सान कहते हैं।

जो पैदा दर्द को कर दे, उसे तान कहते हैं।

जो रिझात है भगवान को, उसे गान कहते हैं।

जो दिल में राम को रखता, उसे हनुमान कहते हैं।

जो पीता है जहर, उसे शिव भगवान कहते हैं।

जो निभाये वचन पिता का, उसे राम कहते हैं।

जो दिया उपदेश गीता में, उसे श्री कृष्ण भगवान कहते हैं।

क्या आप जानते हैं?

चाक–एक अध्यापक की तलवार है।

झगड़ा–वकीलों का कमाउ बेटा है।

किरायेदार–बिना पूर्व सूचना के बजट की सफाई करने वाला है।

पश्चाताप–अपराध धोने का साबुन है।

एन्टीना – कबूतरों का विश्राम स्थल है।

श्रीमती ऊषा कुमारी
टेलिफोन सुपरवाइजर
(वित्त अनुभाग)

क्र० सं	वर्ष 2017–18 में सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	
1	श्री बाल किशन	उप महानिदेशक
2	श्री रामा कृष्णा	उप महानिदेशक
3	श्री द.ल. मेनसे	सहायक महानिदेशक
4	श्री सभाजीत मिश्र	एम.टी.एस.
5	श्री मान सिंह	एम.टी.एस.

दूरसंचार अभियंत्रिकी केन्द्र, नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र, नई दिल्ली, में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2017 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ 14.9.2017 को प्रातः 11:00 बजे श्री लव गुप्ता, वरिष्ठ उपमहानिदेशक, टी.ई.सी. द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को श्री लवगुप्ता द्वारा माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह का संदेश पढ़कर सुनाया गया।

पखवाड़े के दौरान कुल 10 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 28–09–2017 को श्री लव गुप्ता, वरिष्ठ उपमहानिदेशक, टी.ई.सी. की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सभी विजेताओं को पुरस्कार राशि एवं प्रशस्ति पत्र दिये गए। इस मौके पर उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी भाषा में अधिक से अधिक कामकाज और पत्राचार करने का आहवान किया। अंत में श्री राम लाल भारती, उप महानिदेशक (एन.जी.एस.) द्वारा सभी को धन्यवाद देते हुए पखवाड़े का समापन किया गया।

क्र० सं	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार विजेता का नाम	प्राप्त स्थान
1.	श्रुतलेख	श्री चितरंजन कुमार	प्रथम पुरस्कार
2.		श्री सभाजीत मिश्र	द्वितीय पुरस्कार
3.		श्री ईश्वर सिंह	तीसरा पुरस्कार
4.		श्री मान सिंह	सांत्वना पुरस्कार
5.		श्री नागेन्द्र लाल कर्ण	सांत्वना पुरस्कार
6.		श्री रामजी प्रसाद	सांत्वना पुरस्कार
7.	निबंध (राजपत्रित अधिकारियों के लिए)	श्री हर्ष शर्मा	प्रथम पुरस्कार
8.		श्री अभिषेक शर्मा	द्वितीय पुरस्कार
9.		श्री विमल कुमार सिंह	तीसरा पुरस्कार
10.		सुश्री नम्रता सिंह	सांत्वना पुरस्कार
11.		श्री मनीष रंजन	सांत्वना पुरस्कार
12.		श्री राजेश त्रिपाठी	सांत्वना पुरस्कार

क्र० सं	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार विजेता का नाम	प्राप्त स्थान
13.	निबंध (अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए)	श्री शिव चरण	प्रथम पुरस्कार
14.		श्री हरित चौधरी	द्वितीय पुरस्कार
15.		श्री निर्भय कुमार मिश्रा	तीसरा पुरस्कार
16.		श्री लल्लन महतो	सांत्वना पुरस्कार
17.		श्री नागेन्द्र लाल कर्ण	सांत्वना पुरस्कार
18.		श्री ईश्वर सिंह	सांत्वना पुरस्कार
19.		श्री चितरंजन कुमार	सांत्वना पुरस्कार
20.	हिन्दी टिप्पण/ मसौदा लेखन	श्री रोहित गुप्ता	प्रथम पुरस्कार
21.		श्री मनीष रंजन	द्वितीय पुरस्कार
22.		श्री अमर दीप	तीसरा पुरस्कार
23.		श्री राजेश त्रिपाठी	सांत्वना पुरस्कार
24.		श्री वी.पी. अजनसोंडकर	सांत्वना पुरस्कार
25.		श्री अवधेश सिंह	सांत्वना पुरस्कार
26.	हिन्दी व्याकरण ज्ञान	श्री अमर दीप	प्रथम पुरस्कार
27.		श्री रोहित गुप्ता	द्वितीय पुरस्कार
28.		श्री विमल कुमार सिंह	तीसरा पुरस्कार
29.		सुश्री नम्रता सिंह	सांत्वना पुरस्कार
30.		श्री अभिषेक शर्मा	सांत्वना पुरस्कार
31.		श्री मनीष रंजन	सांत्वना पुरस्कार
32.		श्री हर्ष शर्मा	सांत्वना पुरस्कार
33.	अनुवाद	श्री अभिषेक शर्मा	प्रस्थम पुरस्कार
34		सुश्री नम्रता सिंह	द्वितीय पुरस्कार
35.		श्री हर्ष शर्मा	तीसरा पुरस्कार
36.		श्री रोहित गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार

क्र० सं	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार विजेता का नाम	प्राप्त स्थान
37.		श्री राजेश त्रिपाठी	सांत्वना पुरस्कार
38.		श्री मनीष रंजन	सांत्वना पुरस्कार
39.	अंताक्षरी	श्री शिव चरण	प्रथम पुरस्कार
40.		श्री सभाजीत मिश्र	प्रथम पुरस्कार
41.		श्री चितरंजन कुमार	द्वितीय पुरस्कार
42.		श्री राजेश कुमार मीना	द्वितीय पुरस्कार
43.		श्रीमती उषा कुमारी	द्वितीय पुरस्कार
44.		श्री निर्भया कुमार मिश्रा	तीसरा पुरस्कार
45.		श्रीमती आरती	सांत्वना पुरस्कार
46.		श्रीमती रेखा	सांत्वना पुरस्कार
47.		श्री मुनिश्वर ठाकुर	सांत्वना पुरस्कार
48.	हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए	श्री किशन पाल सिंह	प्रथम पुरस्कार
49.		श्री राजेश त्रिपाठी	द्वितीय पुरस्कार
50.		श्री श्रीकृष्ण सिंह	तीसरा पुरस्कार

बधाईयां

हिन्दी पखवाड़ा 2017

बधाईयां

हिन्दी पखवाड़ा 2017

बधाईयां

हिन्दी पखवाड़ा 2017

बधाईयां

हिन्दी पखवाड़ा 2017

एक झलक

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं

एक झलक

हिन्दी कार्यशालाएं

क्षेत्रीय दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र (पश्चिमी क्षेत्र) मुंबई

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी, दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2017 तक इस कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान हिन्दी भाषा को प्रोत्साहन देने हेतु निम्नलिखित प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

(क) समानार्थी शब्द प्रतियोगिता
(ख) अंताक्षरी प्रतियोगिता
(ग) कथावाचन / काव्यवचन प्रतियोगिता

पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में निम्न अधिकारियों / कर्मचारियों ने भाग लेकर आयोजन को सफल बनाया : श्री आर.बी. सदानंदे, श्री टी.बी. शटके, श्री अमित राणे, श्रीमती ज्योति खरे, श्रीमती श्रद्धा तुलसणकर, श्री दलपत जोगड़िय, श्री संतोष निंबालकर, श्रीमती आरती रेवाड़कर, श्रीमती विद्या पाटिल, श्रीमती चेतना सुडकू, सुमन नाईक, जागृति देसाई, रोहिणी प्र जाधव, आर.पी. सोनवणे और वी.बी साकवी।

प्रतियोगिताओं के विजेताओं का विवरण इस प्रकार है:

प्रतियोगिता का नाम	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
समानार्थी शब्द प्रतियोगिता	विद्या पाटिल	जागृति देसाई	रोहिणी प्र जाधव
अंताक्षरी प्रतियोगिता	आर.पी. सोनवणे 'ब' ग्रुप	वी.बी. साकवी 'स' ग्रुप	चेतना सुडकू 'अ' ग्रुप

पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 28 / 09 / 2017 को किया गया। इस समारोह में श्रीमती एस.ए. गोखले, हिन्दी अधिकारी (डब्ल्यू.टी.पी.) को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। हिन्दी पखवाड़े के कार्यक्रमों में श्री अमित राणे, टी.ओ.ए.(जी) टी.ई.सी. का योगदान अत्यंत सराहनीय रहा। पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को उप महानिदेशक (प.क्षे.) द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी भाषा में अधिक से अधिक कामकाज और पत्राचार करने की सलाह दी। श्रीमती एस.ए. गोखले, हिन्दी अधिकारी (डबल्यू.टी.पी.) एवं श्री अमित राणे, टी.ओ.ए.(जी) टी.ई.सी. को भी हिन्दी पखवाड़ा आयोजित करने में उनकी सेवाओं के लिए सराहा गया।

राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान अल्ट परिसर, गाजियाबाद

संस्थान की गतिविधियां

1. **प्रशिक्षण:** संस्थान द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं:

क. आईटीएस बैच 2015 और 2016 के प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ख. पीएण्डटी भवन निर्माण सेवा (बीडबल्यूएस–सविल और इलैक्ट्रिकल) बैच 2015 और 2016 प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ग. 2015 (आरक्षित सूची) और 2016 बैच के कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारियों (जेटीओ) के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

घ. दूरसंचार विभाग के अधिकारियों के लिए दूसरसंचार एवं आईसीटी से जुड़े विषयों जैसे नैक्सट जनरेशन नेटवर्क–अग्रिम, साइबर और टेलीकॉम नेटवर्क सिक्योरिटी आपदा प्रबंधन में दूरसंचार की भूमिका, आईपीवी 6 अभिज्ञता आदि पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ड. दूर संचार और आईसीटी पर अन्य सरकारी विभागों के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम।

2. **आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम:** संस्थान द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया:

क्र.सं.	पाठ्यक्रम का प्रकार	आयोजित पाठ्यक्रमों की संख्या	प्रशिक्षुओं की संख्या	प्रशिक्षु दिवसों की संख्या
1.	आईटीएस प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	37	21 (2013 और 2014 बैच + 36 (2015 बैच) + 34 (2016 बैच)	10947
2.	बीडबल्यूएस प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	22	1 (बीडबल्यूएस–2015) 3(बीडबल्यूएस–2016)	1832
3.	कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारियों (जेटीओ) के इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	12	23 (2015 बैच) + 2 (2016 बैच)	1695
4.	दूरसंचार विभाग के अधिकारियों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम	4	57	129
	कुल संख्या	75	177	14603

3. **भारतीय दूरसंचार सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों की माननीय उप राष्ट्रपति से मुलाकात** : भारतीय दूरसंचार सेवा 2015 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों ने 'उप राष्ट्रपति भवन' में भारत के उप राष्ट्रपति श्री एम.वेंकैया नायडू से दिनांक 27 नवम्बर, 2017 को मुलाकात की। इस अवसर पर उप राष्ट्रपति महोदय ने सर्वप्रथम युवा प्रशिक्षु अधिकारियों को आशीर्वाद दिया और प्रौद्योगिकी का मानवता की उन्नति के लिए प्रयोग करने को कहा। उन्होंने बताया कि हमारे देश का भविष्य डिजिटल भारत है और हमें लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए। माननीय उपराष्ट्रपति महोदय ने बताया कि सरकार द्वारा देश के बेरोजगार युवाओं के लिए स्टैंड–अप इंडिया, स्टार्ट–अप इंडिया, डिजिटल इंडिया, इनक्यूबेशन, इनोवेशन आदि के रूप में पहल की गई हैं। हमें सरकार द्वारा शुरू किए गए इन योजनाओं का फायदा उठाना चाहिए और यह साबित करें कि हम नौकरी तलाशने वाले नहीं अपितु नौकरी देने वाले हैं। विश्व सृदुढ़ हो गया है और हर कोई एलपीजी – उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण में रह रहा हैं। उन्होंने आगे कहा कि प्रौद्योगिकी अग्रिम से ऑनलाइन सेवाओं का प्रयोग करना चाहिए जो देरी और दुरूपयोग से मुक्त हैं। उन्होंने प्रशिक्षुओं से लीक से हटकर कार्य करने की सलाह दी। इस विचार–विमर्श कार्यक्रम के दौरान श्री रविशंकर प्रसाद, केन्द्रीय इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी और काननू एवं न्याय मंत्री, श्री लव गुप्ता, वरिष्ठ उपमहानिदेश (टीईसी/एनटीआईपीआरआईटी), श्री एच.एस. जाखड़, उपमहानिदेशक (टीएंडए), श्री सुभाष चंद, निदेशक (प्रशिक्षण) और श्री मनोरंजन, सहायक महानिदेशक (प्रशिक्षण एवं डब्ल्यूए) मौजूद थे।

माननीय उप राष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडू के साथ भारतीय दूरसंचार सेवा के 2015 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी

4. **आईटीएस–2015 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों का माननीय संचार राज्य मंत्री के साथ पारस्परिक विचार विमार्श :** भारतीय दूरसंचार सेवा बैच 2015 के प्रशिक्षु अधिकारियों का माननीय श्री मनोज सिन्हा, संचार राज्य मंत्री के साथ पारस्परिक विचार–विमर्श कार्यक्रम 04 सितम्बर 2017 को दूरसंचार विभाग, संचार भवन, नई दिल्ली में आयोजित हुआ। माननीय मंत्री महोदय श्री मनोज सिन्हा ने सर्वप्रथम युवा अधिकारियों को आशीर्वाद दिया और भविष्य के रोडमैप तथा साइबर एवं दूरसंचार नेटवर्क सुरक्षा के क्षेत्र में अधिकारियों की भूमिका और जिम्मेदारियों के बारे में चर्चा की। उन्होंने यह भी जोर दिया कि यूपीएससी द्वारा भर्ती किए गए इन अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम आज के परिदृश्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। इस विचार–विमर्श कार्यक्रम के दौरान श्रीमती अरूणा सुंदर राजन, सचिव (टी), श्री लव गुप्ता, वरिष्ठ उप महानिदेशक (टीईसी / एन.टी. आई.पी.आर.आई.टी.), श्री आर के शर्मा, उप महानिदेशक (टी. एंड ए.), एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी., श्री सौरभ गुप्ता, उप महानिदेशक (प्रशिक्षण), दूरसंचार मुख्यालय, श्री एच.एस. जाखड़, उप महानिदेशक (एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.) मौजूद थे।

माननीय संचार राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा और अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण
के साथ भारतीय दूरसंचार सेवा के 2015 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी

5. **आईटीएस / बीडब्लूएस–2016 बैच के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन :**

आईटीएस / बीडब्ल्यूएस–2016 बैच ने 20.11.2017 को एनटीआईपीआरआईटी में जॉइन किया। एक सप्ताह के ओरिएंटेशन प्रोग्राम के दौरान, प्रशिक्षु अधिकारियों ने सी–डॉट कैम्पस और बीएसएनएल भवन नई दिल्ली का दौरा किया। इस अवधि के दौरान प्रशिक्षु अधिकारियों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बीएसएनएल और मुख्य महाप्रबंधक एएलटीटीसी द्वारा संबोधित किया गया था।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारत संचार निगम लिमिटेड के साथ भारतीय दूरसंचार सेवा के 2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी विचार–विमर्श के दौरान

एनटीआईपीआरआईटी के अधिकारियों के साथ आईटीएस/बीडब्ल्यूएस–2016 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी

6. **आईटीएस/बीडब्ल्यूएस–2013 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए विदाई कार्यक्रम का आयोजन :**

2013 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों के इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम की समाप्ति पर राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान, गाजियाबाद में एक विदाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री डी.पी.डे. वरिष्ठ उप महानिदेशक (टीईसी/एनटीआईपीआरआईटी) ने दिनांक 02.06.2017 को विदाई भाषण में प्रशिक्षु अधिकारियों को दूरसंचार क्षेत्र में हो रहे नवीनतम प्रौद्योगिकियों के बदलावों के प्रति जागरूक रहने की सलाह दी क्योंकि यह उन्हें अपने कर्तव्यों का कुशलता से निर्वहन करने में सक्षम बनाएगा।

एनटीआईपीआरआईटी के अधिकारियों के साथ आईटीएस/बीडब्ल्यूएस–2013 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी

7. **आईटीएस–2015 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों द्वारा अध्ययन यात्रा :**भारत में संचार सुविधाओं का अध्ययन करने के लिए आईटीएस–2015 बैच के प्रशिक्षु ने दो सप्ताह के अध्ययन यात्रा की। उनके द्वारा की गई यात्रा का विवरण निम्न प्रकार है :

(क) मैसर्स क्वालकॉम हैदराबाद, आईटीपीसी और दूरसंचार की एलएसए की सुरक्षा शाखा, हैदराबाद।

(ख) मैसर्स हुवावे बंगलौर, बीएसएनएल, एनओसी और कर्नाटक एलएसए, बैगलोर

(ग) मैसर्स एयरसेल, मैसर्स रिलायंस जियो, मैसर्स टाटा कम्युनिकेशंस लिमिटेड (टीसीआई), अहमदाबाद और स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी) अहमदाबाद।

अध्ययन यात्रा के दौरान प्रशिक्षु अधिकारियों को दूरसंचार की रूपरचना की कार्यप्रणाली के बारे में जानने और दूरसंचार क्षेत्र के पारिस्थितिक तंत्र को समझने का अवसर मिला।

स्पेस एप्लीकेशन सेंटर (एसएसी) अहमदाबाद में 2015 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी

टेलीकॉम सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (टीसीआई), अहमदाबाद में 2015 बैच के प्रशिक्षु अधिकारी

8. राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान में जापानी प्रतिनिधिमंडल की यात्रा

दूरसंचार के क्षेत्र में भावी सहयोग के बारे में चर्चा के लिए, आंतरिक मामलों एवं संचार मंत्रालय (एमआईसी), जापान सरकार और जापान के दूतावास के सदस्यों से मिलकर बने जापानी प्रतिनिधिमंडल द्वारा 21 जून 2017 को एनटीआईपीआरआईटी, गाजियाबाद का दौरा किया। चर्चा के दौरान प्रशिक्षण अवसरंचना की उपलब्धता, जापान और भारत के बीच संभावित सहयोग के क्षेत्र सहित एनटीआईपीआरआईटी की कैपेसिटी बिल्डिंग क्षमताओं पर एक प्रस्तुति दी गई। इसके बाद दूरसंचार क्षेत्र में दोनों देशों की बीच भविष्य में सहयोग हेतु विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए जापानी प्रतिनिधिमंडल और दूरसंचार विभाग/एनटीआईपीआरआईटी के अधिकारियों द्वारा विस्तृत विचार–विमर्श किया गया। चर्चा के दौरान श्री डी.पी. डे, तत्कालीन वरिष्ठ उप महानिदेशक (टीईसी/एनटीआईपीआरआईटी), उप महानिदेशक (आईआर) और निदेशक (आईआर), दूरसंचार विभाग और एनटीआईपीआरआईटी के उप महानिदेशक और निदेशक उपस्थित थे। जापानी प्रतिनिधिमंडल द्वारा एनजीएन / आईएमएस और एलटीटीसी, गाजियाबाद की 3 जी प्रयोगशालाओं का भी दौरा किया।

जापानी प्रतिनिधिमंडल और दूरसंचार/एनटीआईपीआरआईटी के अधिकारी विचार–विमर्श करते हुए

एनजीएन/आईएमएस लैब में जापानी प्रतिनिधिमंडल

एनटीआईपीआरआईटी के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ जापानी प्रतिनिधिमंडल

9. **हिन्दी कार्यशाला** : संस्थान में 27 सितम्बर 2017 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन उत्साहपूर्वक एवं सफलतापूर्वक किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा
2017

समापन

दूरसंचार विभाग

दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली – 110001

वेबसाईट : **www.tec.gov.in**

क्षेत्रीय कार्यालयः

पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

प्रथम तल, दूरसंचार क्यूए बिल्डिंग, ईपी एण्ड जीपी ब्लॉक,
सॉल्ट लेक, सेक्टर 5, कोलकाता–700091

पश्चिमी क्षेत्र, मुम्बई

द्वितीय तल, डी विंग, बीएसएनएल प्रशासनिक भवन,
जुहू रोड़, शान्ता क्रूज (वेस्ट) मुम्बई–400054

दक्षिणी क्षेत्र, बेंगलूरू

द्वितीय मंजिल, जया नगर टेलीफोन एक्सचेंज,
9 वां मेन, चौथा ब्लॉक, जयानगर, बेंगलूरू–560011

उत्तरी क्षेत्र, नई दिल्ली

गेट नं. 5, खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली–110001

Designed & Printed by : Asian Paper Products, Faridabad 9871734269